भावाबिलास ।

जिस्की

मैनपुरीनिवासी प्रसिद्ध श्री देव कवि जी ने समस्त नायक नायिकाभेद अथच अलङ्कारवर्णन सहित रचना की ।

इस ग्रन्थ को बाबू रामकृष्ण वर्म्मा भारतजीवन सम्पादक ने रियासत सूर्य्यपुरा से हाथ की लिखी हुई प्रति पाकर अत्यन्त परिश्रम से शुद्ध कर छपवाया है ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९२ ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।)

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ देवकृत भावबिलास ।

दोहा ।

राधा कृष्ण किसोर जुग पग बंदो जगबंद ।
मूरति रति शृङ्गार की शुद्ध सच्चिदानन्द ॥

छप्पै ।

श्रीवृन्दावन चन्द चरण युग चरचि चित्त धरि । दलिमलि कलिमल सकल कलुष दुख दोष मोष करि॥ गौरीसुत गौरीस गौरि गुरुजन गुण गाये । भुवनमात भारती सुमिरि भरतादिक ध्याये॥ कवि देवदत्त शृङ्गार रस सकल भाव संयुत सच्यो । सब नायकादि नायक सहित अलङ्कारवर्णन रच्यो ॥ २ ॥

दोहा ।

अरथ धर्म ते होइ अरु काम अरथ तें जानु ।
तातें सुख सुख कों सदा रस शृङ्गार निदानु ॥

ताके कारण भाव हैं तिनको करत विचार ।
जिनहि जानि जान्यो परै सुखदायक शृङ्गार ॥

अथ भाव भेद – दोहा ।

थिति विभाव अनुभाव अरु कह्यो सात्विक भाव।
संचारी अरु हाव ये बरण्यो षड्विध भाव ॥

अथ थिति भाव लक्षण – दोहा ।

जो जा रसकी उपज में पहिले अंकुर होय।
सो ताको थिति भाव है कहत सु कवि सब कोइ॥
नवरस के थिति भाव हैं तिनको बहु बिस्तारु।
तिनमें रति थिति भावतें उपजत रस शृङ्गारु॥

अथ रतिलक्षण – दोहा ।

नेक जु प्रियजन देखिसुनि आन भाव चित होइ।
अतिकोबिदपीतकबिनकेसुमतिकहतरतिसोइ॥

अथ प्रिय दर्शन तें यथा कबित ।

सङ्ग ना सहेली केली करति अकेली एक को-
मल नवेली बर बेली जैसी हेम की । लालच
भरे से लखि लाल चलि आये सोचि लोचन

लचाय रही रासि कुल नेम की ॥ देव मुर-
झाय उरमाल उरझाय कह्यो दीजो सुर-
झाइ बात पूछी छल छेम की । भायक सु-
भाय भोरें स्याम के समीप आय गांठि छु-
टकाइ गांठि पारि गई प्रेम की ॥

अथ प्रिय श्रवणते — सवैया ।

गौने के चार चली दुलही गुरुलोगन
भूषन भेष बनाये । सील सयान सखीन सि-
खायो सबै सुख सासुरेहू के सुनाये ॥ बो-
लिये बोल सदां हँसि कोमल जे मनभावन
के मन भाये । यों सुनि ओछे उरोजनि पै
अनुराग के अंकुर से उठि आये ॥ १० ॥

इति थिति भाव । अथ बिभाव—दोहा ।

जे बिशेष करि रसनि कों उपजावत हैं भाव ।
भरतादिकसतकिव सबै तिनकों कहत बिभाव ॥
ते बिभाव द्वै भांति के कोबिद कहत बखानि ।
आलम्बन कहि देव अरु उद्दीपन उर आनि ॥

अथ आलम्बन - दोहा।

रस उपजै आलम्बि जिहिं सो आलम्बन होइ।
रसहि जगावै दीप ज्यों उद्दीपन कहि सोइ॥

यथा सवैया।

चित दै चितऊं जित ओर सखी तित नन्दकिशोर की ओर ठई । दसहू दिस दूसरौ देखति ना छबि मोहन की छिति माह छई॥ कवि देव कहालों कछू कहिये प्रति मूरति हौं उनही की भई। बृजबासिन कौ बृज जानि परै न भयो ब्रज री बृजराज मई॥१४॥

अथ उद्दीपन दोहा।

गीत नृत्य उपवनगवन आभूषन बनकेलि ।
उद्दीपन श्रृङ्गार के विधु बसन्त बन बेलि॥

गीत ते — यथा सवैया।

आली अलापि बसन्त मनोरम मूरतिवन्त मनोज दिखावनि। पंचम नाद निखादहि में सुर मूरछना गन ग्राम सुभावनि॥

देव कहै मधुरी धुनि सौं परवीन ललै कर-बीन बजावनि । बावरी सी हौं भई सुनि आजु गई गड़ि जी मैं गुपाल की गावनि ॥

नृत्यतें ।

पीरी पिछोरी के छोर छुटे छहरै छबि मोर-पखान की जामैं । गोधन की गति बैनु बजैं कवि देव सबै सुनिकैं धुनि आमैं ॥ लाज तजी गृहकाज तजे मन मोहि रही सिगरी बृजबामैं । कालिंदी कूल कदम्ब के कुञ्ज करैं तम तोम तमासौ सो तामैं ॥

उपबन गवन तें—सवैया ।

बाग चली वृषभान लली सुनि कुंजनि मैं पिकपुञ्ज पुकारनि । तैसिय नूतन नूत लतान मैं गुञ्जत भौंर भरे मधु भारनि ॥ मोहि लई कवि देवन तें अति रूप रचे विकचे कचनारनि । हेरतही हरनीनयना को हरो हियरा हरि के हिय हारनि ॥ १८ ॥

आभूषनते—यथा सवैया।

खोरि मैं खेलन ल्याई सखी सब बाल को भेष बनाइ नवीनो। आरसी मैं निजरूप निहारि अनङ्ग तरङ्गनि सों मनु भीनो॥ जोति जवाहर हारन की मिलि अञ्चल को छल-क्यो पट झीनो। हेरि इतै हरिनीनयना हरि हैरत हेरि हरैं हँसि दीनो॥ १६॥

बनकेलि ते यथा—सवैया।

सोहे सरोवर बीच बधूबर व्याह को बेष बन्यो बर लीक सो। लाज गड़े गुरुलोगनि की पट गांठि दै ठाड़े करैं इक ठीक सो॥ न्हात पमारी से प्यारी के ओठ ते झूठो मजीठ निहारि नजीक सो। ती की रँगी अँ-खियां अनुराग सों पी की वहै पिकबैनी की पीक सो॥

बिधु ते यथा सवैया।

दिन द्वैकतें सासुरे आई बधू मन में मनु लाज को बीज बयो। कबि देव सखी के

सिखायें मरू कै नह्यो हिय नाह को नेह नयो ॥ चितवावत चैत की चन्द्रिका ओर चितै पति को चित चोरि लयो। दुलही के बिलोचन बानन कौं ससि आज कौ सान समान भयो ॥

बसन्त ते यथा सवैया।

हेरतही हरि लीनो हियो इन आल रसाल सिरीष जम्हीरनि। चंपकबेली गुलाब जुही पिचुमन्द मधूक कदम्ब कुटीरनि ॥ खोलत कामकथा पिक बोलत डोलत चंदन मन्द समीरनि। केसर हार सिगारनहू करना कचनार कनेर करीरनि ॥ २२ ॥

दोहा।

निज निज के संजोग तैं रस जिय उपजतु होइ।
औरौ बिबिध बिभाव बहु बरनैं कवि सब कोइ॥

यथा - सवैया।

सुनि के धुनि चातक मोरनि की चहुँओरनि कोकिल कूकनि सों । अनुरागभरे हरि

बागन में सखि राग तराग अचूकनि सों ॥
कवि देव घटा उनई जु नई बनभूमि भई
दल दूकनि सों। रँगराती हरी हहराती लता
झुकि जाती समीर की झूकनि सों ॥२४॥

इति बिभाव। अथ अनुभाव—दोहा

जिनकों निरखत परस्पर रस कौ अनुभव होइ।
इनहीं कौ अनुभाव पद कहत सयाने लोइ॥२५॥
आपुहि ते उपजाय रस पहिले होहिं बिभाव।
रसहि जगावैं जो बहुरि तौ तेऊ अनुभाव॥२६॥
आनन नयनप्रसन्नताचलिचितौनिमुसक्यानि।
ये अभिनय सिंगार के अङ्ग भङ्ग जुत जानि॥

अथ आननप्रसन्नता यथा सवैया।

ठाढ़ो चितौत चकोर भयो अनतै न इतौ
तु कहूं चित दीजतु। सामुहैं नंदकिसोर
सखी कवि को मुसक्यानि सुधारस भीजतु॥
भाग ते आइ उओ कविदेव सुदेख भेटू भ-
रिलोचन लीजतु। तेरे री चंदमुखी मुखचंद
पै पूरनचंद निछावरि कीजतु॥ २८॥

नयनचञ्चलता यथा सवैया ।

आई ही गाय दुहाइवे कों सु चुखाइ चली न बछान को घेरति । नैकु डराय नहीं कब की वह माइ रिसाय अटा चढ़ि टेरति ॥ यों कविदेव बड़े खन की बड़रे दृग बीच बड़े दृग फेरति । हौं मुख हेरति ही कब की जब की यह मोहन को मुख हेरति ॥ २६ ॥

चलचितौन यथा सवैया ।

हरि को इतै हेरत हेरत हेरि उतै डर आलिन को परसै । तनु तोरि के जोरि मरोरि भुजा मुख मोरि कैं बैन कहे सरसै ॥ मिस सों मुसक्याइ चितै समुहें कविदेव दरादर सों दरसै । दृगकोर कटाक्ष लगे सरसान मनो सरसान धरैं बरसै ॥ ३० ॥

मुसक्यानि यथा सवैया ।

जब तें जदुराई दई दुहि गाय गये मुसक्याइ पछे घरके । तब तें तन व्याकुल बालवधू लखि लोग लुगाई सबै घरके ॥ कवि

देव न पावत बेदन बेद रहे कुलदेवन के डरके । नहिं जानत कान्ह तिहारे कटाछ की कोरै करेजन मैं करके ॥ ३१ ॥

अंग भंग यथा सवैया ।

चंपक पात से गात मरोरि करोरिक आप सुभाइ सचैयत । मो मिस भेंटि भटू भरि अङ्क मयङ्क से आनन ओठ अचैयत ॥ देव कहे बिन बात चलें नव नीलसरोज से नैन नचैयत । जानति हौं भुजमूल उचाय दु-कूल लचाइ लला ललचैयत ॥ ३२ ॥

दोहा ।

औरो बिबिध बिभाव के बहु अनुभावनु जानु ।
जिन सें रस जान्यो परै ते कविदेव बखानु ॥

सवैया ।

आवति जाति गली मैं लली हरि हेरि हरैं हियरा हहरैगी । बैरी बसैं घरघाल घरी मैं घरै घर घेरि घरी उघरैगी ॥ हौं कविदेव डरौं मन मैं मनमोहनी तूं मन मैं न डरैगी ।

हाहा बलाइ ल्यौं पीठ दै बैठुरी काहू अनीठि की दीठि परैगी ॥ ३४ ॥

इति श्रीकविदेवदत्तविरचिते भावविलासे स्थाईभाव-विभावअनुभावनिरूपणे प्रथमो विलासः ॥ १ ॥

अथ सात्विकभाव—दोहा ।

थिति बिभाव अनुभाव तें न्यारे अति अभिराम।
सकल रसनि मैं संचरें सांचरीकउ नाम ॥१॥
ते सारीर रु आंतर द्विविध कहत भरतादि ।
स्तंभादिक सारीर अरु आंतर निरबेदादि ॥२॥
आठ भेद स्तंभादि के तिनकौ सात्विक नाम।
तेई पहिले बरनिये सरस रीति अभिराम॥३॥

अथ सात्विक भेद—दोहा ।

स्तंभस्वेद रोमांच अरु वेपथु अरु स्वरभङ्ग ।
बिवरनता आंसू प्रलय ये सात्विक रस अङ्ग ॥

अथ स्तंभ लच्छन—दोहा ।

रिस बिस्मय भयराग सुख दुख बिषाद तें होय।
गति निरोध जो गात मैं तम्भु कहत कवि लोइ॥

यथा सवैया ।

गोरी सी ग्वालिन थोरी सी बैस जगी तन जोबन जोति नई है। आवतही अबही उततें कबिदेव सु नेंकु इतें चितई है॥ योहि कटाछनु मोहि चितौतु चितौतहि मोहन मोहि लई है। व्याधहनी हरिनी लों बधू बह वा घर लों भिहराति गई है॥

अथ खेद लक्षण दोहा ।

क्रोध हर्ष संताप श्रम घातादिक भय लाज।
इनतें सजल सरीर सो खेद कहत कबिराज॥

यथा सवैया ।

हेलिन खेलिन के मिस सुन्दरि केलि के मन्दिर पेलि पठाई। बालबधू बिधु सौं मुख चूमि लला छलसों छतियां सों लगाई॥ लाल के लोल कपोलनि मैं झलक्यो जल-दीपति दीप की झांई । आरसी मैं प्रतिबिम्बत ह्वै मनों देव दिवाकर देत दिखाई॥ ८॥

अथ रोमांच लक्षण दोहा ।

आलिंगन भय हर्ष अरु सीत कोप तें जानु ।
उठत अङ्ग मे रोम जे ते रौमांच बखानु ॥ ६ ॥

यथा सवैया ।

कूल चली जलकेलि के कामिनि भावते के सँग भाति भली सी । भींजे दुकूल में देह लसै कबिदेव जू चम्पक चारु दली सी ॥ बारि के बूंद चुवैं चिलकैं अलकैं छबि की छलकैं उछली सी । अञ्चल भीन भकें भ- लकैं पुलकैं कुच कन्द कदम्ब कलीसी ॥१०॥

अथ वेपथु लक्षण—दोहा ।

प्रिय-आलिंगन हर्ष भय सीत कोप तें जानु ।
अङ्ग कम्प प्रस्फुरन बिनु वेपथु ताहि बखानु ॥

यथा सवैया ।

देव दुहून के देखतहीं उपज्यो उर में अ- नुराग अनूनों । डोलत हैं अभिलाष भरे सुलग्यो बिरहज्वर अङ्ग अभूनों ॥ तौलों अचानक ह्वै गई भेंट इतै उत ठौर निहारत

सूनों। प्रीतिभरे उर भीतिभरे बनकुंज मै
कम्पति दम्पति दूनों ॥ १२ ॥

अथ स्वरभंग लक्षण—दोहा।

जो रिसभय मुदमद भयें निकसै गदगद बानि।
ताही कों स्वरभङ्ग कहि कबिबर कहत बखानि॥

यथा सवैया।

परदेस तें प्रीतम आये हिए इक आइ
के आली सुनाई यही। कविदेव अचानक
चौंक परी सुनि तें बलि वा छतियां उमही॥
तब लौं पिय आगन आइ गये धनधाय हिये
लपटाय रही। अँसुवा ठहरात गरो घहरात
मरू करि आधिक बात कही॥ १४॥

अथ विवरनता लक्षण दोहा।

भय बिमोह अरु कोप तें लाज सीत अरु घाम।
मुखदुति औरें देखिये सो बिबरनता नाम॥१५॥

यथा सवैया।

सुन्दरि सोवति मन्दिर में कहूं सापने में
निरख्यो नँदुनन्द सो। त्यों पुलक्यो जल सों

झलक्यो उर औचकही उचको कुचकंद सों ॥ तौ लगि चौंकि परी कहि देव सु जानि परो अभिलाष अमन्द सों । आलिन को मुख देखतहीं मुख भावती को भयो भोर को चन्द सो ॥ १६ ॥

अथ अश्रु लक्षण दोहा ।

विपल विलोकत धूम भय हर्ष अमर्ष विषाद।
नैनन नीर निहारिये अश्रु कहें निरबाद ॥

सवैया ।

बोलि उठो पपिहा कहूँ पीव सु देखिबे को सुनिके धुनि धाई । मोर पुकारि उठे चहुं-ओर सुदेव घटा घिरकी चहुंघाई ॥ भूलि गई तिय कों तन की सुधि देखि उतै बन भूमि सुहाई । सांसनि सों भरि आयौ गरो अरु आंसुन सों अँखिया भरि आई ॥१८॥

अथ प्रलय लक्षण दोहा ।

प्रियदर्सन सुमिरन श्रवन होत अचल गतिगात।
सकल चेष्टा रुकि रहै प्रलय कहैं कवि तात ॥

यथा सवैया ।

गोरी गुमान भरी गजगामिन कालि धौं को वह कामिनि तेरे । आई जु ती सुचि तें मुसक्याइ के मोहि लई मनमोहन मेरे ॥ हाथन पांय हले न चलें अँग नीरज नैन फिरै नही फेरे। देव सुठौरही ठाड़ी चितौति लिखी मनों चित्र बिचित्र चितेरे ॥ २० ॥

इति सात्विक सारीर सञ्चारी ।

अथ आंतर सञ्चारीभाव निरूप्यते दोहा ।

सात्विक होत शरीर तें ताहीं तें सारीर ।
अन्तर उपजै आंतरिक ते तेंतिस कहि धीर ॥

अथ षटपदम् ।

प्रथम होय निर्वेद गलानि सुयाकउ ।
मद अरुश्रम आलस्य दीनता चिन्ता बरनउ ॥
मोह सुमृत धृति लाज चपलता हर्ष बखानहु । जड़ता दुख आवेग गर्व उत्कण्ठा जानहु ॥ अरु नीद अवस्मृति सुप्रति अब

बोध क्रोध अवहित्थ मति । उग्रत्व व्याधि उन्माद अरु मरन त्रास अरु तर्कतात्ति ॥४॥

अथ निर्वेद लक्षण दोहा ।

चिंता अश्रु प्रकाश करि अपनोई अपमानु ।
उपजहि तत्वज्ञान जहँ सो निर्वेद बखानु ॥३॥

यथा सवैया ।

मोह मढ्यो चतुराई चढ्यो चित गर्व बढ्यो करि मान सों नातो । भूलि परो तब तौ मदमन्दिर सुन्दरता गुन जोबन मातौ ॥ सूझि परी कविदेव सबै अब जानि परौ सिगरौ जग जातौ । नैसुक मो में जो होतो सयान तौ होतो कहा हरि सों हित हातौ ॥४॥

अथ ग्लानि लक्षण दोहा ।

भूख प्यास अरु सुरत सम निरबल होय शरीर ।
सिथिल होयअवयव सबै ग्लानिकहतसोधीर ॥

यथा सवैया ।

रंगभरे रति मानत दम्पति बीति गई

रतिआ छनही छन। प्रीतम प्रात उठे अल-
सात चिते चित चाहत धाइ गह्यो धन ॥
गोरी के गात सबै अँगिरात जु बात कही न
परी सु रही मन। भौहैं नचाय लचाय के लो-
चन चाय रही ललचाय लला-मन ॥ ६ ॥

अथ संका लक्षण दोहा।

अपराधादि अनीति करि कंपै करै छिपाय।
ताही सों संका कहैं सबै कविन के राय ॥

यथा सवैया।

या डर हौं घरही मैं रहौं कविदेव दुरो
नहीं दूतनि को दुखु। काहू की बात कही
न सुनी मन माहि बिसारि दियो सिगरो
सुख ॥ भीर मैं भूले भये सखि मैं जबते
जदुराई की ओर कियो रुख। मोहि भटू
तब तें निस द्यौस चितौतही जात चवाइनि
को मुख ॥ ७ ॥

अथ असूया लक्षण दोहा ।

क्रोध कुबोध बिरोध तें सहै न यह अधिकारु ।
उपजै जहँ जिय दुष्टता सु असूया अवधारु ॥८॥

यथा सवैया ।

गोकुल-गांव की गोपबधू बनि के निकसीं उर दै दै बुलायो । सोरही साजि सिंगार सबै बन देखन कों बहु भेष बनायो ॥ राधिका के हिय हेरि हरा हरि के हिय कौ पिय कों पहिरायो । केती तहां तिय ती तिन भौंतिन मोतिन सों तिनको तनु तायो ॥९॥

अथ मद लक्षण दोहा ।

सो मद जहँ आसव पिये हर्ष होत हियबीच ।
नीद हास रोदन करै उत्तम मध्यम नीच ॥१०॥

यथा सवैया ।

आसव सेइ सिखाये सखीन के सुन्दरि मन्दिर मैं सुख सोवै । सापने मैं बिछुरे हरि हेरि हरैं हरैं हरिनीदृग रोवै ॥ देव कहै

उठि के बिरहानल आनँद के अँसुवानि समोवै। आजुही भाजि गई सब लाज हँसै अरु मोहन कौ मुख जोवै ॥ ११ ॥

अथ श्रमलक्षण दोहा।

अति रति अति गति ते जहां उपजै अतितनखेद
सो श्रम जामें जानिये निरसहता अर स्वेद ॥

यथा कवित्त।

खरी दुपहरी बीच तरुन तरु नगीच सही परे तरनि के करनि की जोति है। तामें ताजि धाम चली श्याम पै विकल बाम काम सरदाम बपु रूपहि बिलोति है ॥ बड़े बड़े बारनि तें हारनि के भारनि तें थाकी सुकुमारि अङ्ग स्वेद रङ्ग धोति है। सङ्ग न सहेली सु अकेली केलीकुञ्जनि मैं बैठाति उठाति ठाढ़ी होति चलि होति है ॥ १३ ॥

अथ आलस्य लक्षण दोहा।

बहु भूषादिक भावतें कारजु कह्यौ न जाय।
सो आलस्य जहां रहै तन अक्षमता छाय ॥

यथा कवित्त ।

ऊधौ आये ऊधौ आये हरि कौ सँदेसौ लाये सुनि गोपी गोप धाये धीर न धरत हैं। बोरी लगि दौरीं उठीं भोरी लौं भ्रमति मति गनति न जनो गुरू लोगनि दुरत हैं॥ ह्वै गईं बिकल बाल बालम बियोग भरी जोग की सुनत बात गात त्यों जरत हैं। भारे भये भूषन सम्हारे न परत अङ्ग आगे को धरत पग पाछे को परत हैं॥ १५॥

अथ दीनता दोहा॥

दुरगति बहु बिरहादि तैं उपजै दुःख अनन्त।
दीन बचन मुख तें कढ़े कहैं दीनता सन्त॥

यथा कवित्त ।

रैनि दिन नैन दोऊ मास ऋतु पावस के बरसत बड़े बड़े बूंदनि सों झरिये। मैन सरजोर मारे पवन झकोरनि सों आई है उमगि छिनि छाती नीर भरिये॥ टूटी नेह नांव छूटो श्याम सों सुहागुगुनु तातें कवि

देव कहैं कैसे धीर धरिये। बिरह नदी अ-
पार बूड़तही मांझधार ऊधो अब एकबार
खेइ पार करिये ॥ १५ ॥

अथ चिन्ता लक्षण दोहा।

इष्ट बस्तु पायें बिना एक आस चितु होइ।
स्वांस ताप वैवरण जहं चिन्ता कहियतु सोइ॥

यथा सवैया।

जानाति नाहि हरे हरि कौन के ऐसी धौ
कौन बधू मन भावे। मोही सों रूठि कें बैठि
रहे किधों कोई कहूं कछू सोध न पावे ॥
वैसिय भाति भटू कबहूं अब क्योंहूं मिलै
कहूं कोई मिलावे। आंसुनि मोचति सोचति
यों सिगरो दिन कामिन काग उड़ावे ॥१६॥

अथ मोह लक्षण दोहा।

अद्भुत दरसन बेगभय अतिचिंता अतिकोह।
जहां मूर्छा बिस्मरन लंभतादि कहुं मोह ॥

यथा सवैया ।

औरौ कहा कोऊ बालबधू है नयो तन जोबन तोहिं जनायो । तेरेई नैन बड़े बृज में जिन सों बस कीनों जसोमति-जायो ॥ डोलतु है मनो मोल लियो कबिदेव न बोलत बोल बुलायो । मोहन कौ मन मानिक सौ गुन सों गुहि ते उर सों उरझायो ॥२१॥

अथ स्मृति लक्षण दोहा ।

संसकारसम्पतिबिपतिअधिकप्रीतिअतित्रास ।
प्रियअप्रियसुमिरनसुमृतिइकचितमौनउसांस॥

यथा सवैया ।

नीरभरे मृग कैसे बड़े दृग देखति नीचे निचाइ निचोलनि । लैलै उसांसे लिखै धरनी धरि ध्यान रहै करि डीठि अडोलनि ॥ बैठि रहै कबहूं चुप ह्वै कबिदेव कहै कर चापि कपोलनि । बालम के बिछुरें यह बाल सुनै नहि बोल न बोलति बोलनि ॥ २३ ॥

अथ धृत लक्षण दोहा ।

ज्ञानशक्ति उपजै जहां मिटै अधीरज दोष।
ताही सों धृति कहत जहँ जथा लाभ सन्तोष॥

यथा सवैया ।

रावरो रूप रह्यो भरि नैननि बैननि के रस सों श्रुति सानो । गात में देखति गात तुह्मारे ये बात तुह्मारीये बात बखानो ॥ ऊधो हहा हरिसों कहियो तुमहो न यहां यह हौं नहि मानों । या तन तें बिछुरे तु कहा मन तें अनतै जु बसौ तब जानों ॥ २५ ॥

अथ लाजलक्षण दोहा ।

दुराचार अरु प्रथम रत उपजै जिय संकोचु ।
लाज कहैं तासों जहां मुखगोपन गुरुसोचु ॥

यथा सवैया ।

आजु सखी सुख सोई सु तो सखी सांचिहू सोच सकोच के हाते। हातो भयो कहु कैसे सकोच बढ़े निसनाह सों नेह के नाते ॥

कैसी कही रति मानि रही रति मन्दिर मैं मदिरा मदमाते। मारि हथेरी हरे हिय देव सुदाबि रही अँगुरी इक दांते ॥ २७ ॥

अथ चपलतालक्षण दोहा।

राग रु क्रोध बिरोध तें चपल चेष्टा होय ।
कारज की उत्तालता कहत चपलता सोइ ।

यथा सवैया ।

खेलत मैं वृषभानसुता कहुं जाय धसी बनकुंजन मैं है। डार सों हार तहां उरझ्यो सुरझाय रही कवि देव सखी द्वै ॥ तौ लगि आप गयो उत तें सु नगीच मानो चितबीच परे छ्वै। छोहरवा हरवा हरवाइ दै छोरि दियो छल सों छतिया छ्वै ॥ २९ ॥

अथ हर्षलक्षण दोहा।

प्रिय दरशन श्रवनादि ते होय जु हिये प्रसाद।
बेग खेद आंसू प्रलय हर्ष लखौ निर्वाद॥३०॥

यथा कवित्त ।

बैठी ही सुंदरि मंदिर मैं पति को पथ पेषि पतिव्रत पोखें। तो लगि आयेरी आइ

कह्यो दुरि द्वार तें देवर दौरि अनोखे ॥ आनद में गुरु की गुरताउ गनी गुनगौरि न काहू के ओखें । नूपुर पाइ उठे झनकाइ सु जाइ लगी धन धाइ झरोखे ॥ ३१ ॥

अथ जड़ता लक्षण दोहा ।

हित अहितहि देखै जहां अचल चेष्टा होइ ।
जानि बूझि कारज थकै जड़ता बरनैं सोइ ॥

अथ सवैया ।

कालिंदी के तट कालिह भटू कहूं है गई दोउन भेटें भलीसी । ठौरही ठाड़े चितौत इतौतन नैकऊ एक टकी टहली सी ॥ देव को देखती देवता सी बृषभानलली न हली न चली सी । नन्द के छोहरा की छवि सों छिनु एक रही छवि छैल छली सी ॥ ३३ ॥

अथ दुख लक्षण दोहा ।

उत्तम मध्यम नीच क्रम लघु चिन्ता अप्रसाद ।
महासोक ये धन गये हित संसो सुविषाद ॥

यथा सवैया ।

केलि करें जल में मिलि बाल गुपाल तहीं तट गैयन घेरे । चोरि सबै हरवा हरवाइ दै दूरि तें दौरि बछानु कों फेरे ॥ हार हरें हिय में हहरें तिय धीर धरे न करै इक टेरे । राधिका ठाढ़ी हरेई हरें हरिके मुख ओर हँसै अरु हेरे ॥ ३५ ॥

अथ आवेग लक्षण दोहा ।

प्रिय अप्रिय देखें सुनें गात पात से वेग ।
होय अचानक भूरि भ्रम सो बरनें आवेग ॥

यथा सवैया ।

देखन दौरीं सबैं बृजबाल सु आये गुपाल सुने बृज भूपर । टूटत हार हिये न सम्हारती छूटत बारन किंकिन नूपुर ॥ भार उरोज नितम्बन कौन सैहै कटि को लटिबो कृस दूबर । देव सु दै पथ आई मनों चढ़ि माई मनोरथ के रथ ऊपर ॥ ३७ ॥

अथ गर्व लक्षण दोहा ।

बहु बल धन कुल रूपतें सिरु उन्नतु अभिमान।
गिने न काहे आपु सम ताही गर्व बखान ॥

यथा सवैया ।

देव सुरासुर सिद्धवधून कों एतौ न गर्व जितौ इह ती को । आपने जोबन के गुन के अभिमान सबै जग जानत फीकौ ॥ काम की ओर सकोराति नाक न लागत नाक को नायक नीको । गोरी गुमानिनि ग्वारि गमारि गिने नही रूप रतीको रती को ॥

अथ उतकण्ठा लक्षण दोहा ।

प्रिय सुमिरन तें गात में गोरव आरसु होय ।
देस न काल सह्यो परे उतकण्ठा कहु सोइ ॥

यथा सवैया ।

कैधों हमारिये बार वड़ो भयो कै रवि कौ रथ ठौर ठयो है । भोर तें भानु की ओर चितौति घरी पल तें गनतेही गयो है ।

आवतु छोर नही छिनकौ दिन कौन अभै लगि जाम गयो है । पाइये कौसिक सांझ तुरन्तहि देखुरी धोस दुरन्त भयो है ॥ ४१ ॥

अथ नींद लक्षण दोहा ।

चिन्ता आरस खेद तें बसे तुचां चितु जाय ।
सुपन दरस अवयव चलन एकउ नीद सुभाय॥

यथा सवैया

सोवत तें सखी जान्यो नही वह सोवत तें घर आयौ हमारे । पीतपटी कटि सों लपिटी अरु सांवरो सुन्दरु रूप सँवारे ॥ देव अबै लगि आखिन तें वह बांकी चितौनि टरै नहि टारै । सापने मैं चित चोरि लियो वह चोर री मोर पखौवन-वारे ॥४३॥

अथ अपस्मार लक्षण दोहा ।

अधिक दुःख अतिभय असुचि सूने ठौर निवास।
अपस्मारजह भूपतन कम्प फैन मुख स्वांस ॥

यथा सवैया ।

मोहन माई चले मथुरा तब तें निस वासर बीतल ठाढे । बौरी भई बृज की बनिता

बहु भांतिन वेव वियोग के बाढ़े ॥ भूलि गई गुरु लोग की लाज गए ग्रहकाज ग्रसी ग्रह गाढ़े । भीतिन सों अभिरें महराइ गिरें फिरि धाइ फिरें मुख काढ़े ॥ ४५ ॥

अथ सुमृति लक्षण दोहा ।

नीद बढ़े तब तबनहूं चाव रीति चितु जाइ ।
आति उसांस मुद्रित नयन सुमृति कहें कविराय॥

यथा सवैया ।

सामरो सोतु सुन्यो सुख सों कहु कालिही कूल कदम्ब के कोरे । गोपबधू जुरि आईं सबै वृजभूषन के सब भूषन चोरे ॥ काहू लई कर की बँसुरी कविदेव कोई कर कंकन मोरे । काहू हरौ हिय कौ हरवा हरवाइ कोई कटि कौ पटु छोरे ॥ ४७ ॥

अथ अवबोध लक्षण दोहा ।

नींद गये मीजे नयन अंग भंग जमुहाइ ।
एक वार इन्द्रिय जगे तेकउ नींद सुभाय ॥ ४८ ॥

यथा सवैया ।

सापने में गई देखन हौं सुनि नाचतु नंद जसोमति कौ नट । वा मुसक्याइ के भाव बताइ के मेरोई खैचि खरौ पकरो पट ॥ तौ लगि गाय रम्हाइ उठी कबिदेव वधूनि मथ्यो दधि कौ घट । चौंकि परी तब कान्ह कहूं न कदंब न कुंज न कालिंदी कौ तट ॥४६॥

अथ क्रोधलक्षण दोहा ।

अधिक्षेप अपमान ते खेद कंप दृगराग ।
अहंकार जिय में बढ़ै क्रोध सुनहु बड़भाग ॥

यथा सवैया ।

देव मनावत मोहन जू कब के मनुहारि करैं ललचौंहैं । बातें बनाय सुनावैं सखी सब तातें औ सीरी रसौंहैं रिसौंहैं ॥ नाह सो नेह तऊ तरुनी तजि राति बितौति चितौति न सौंहैं । मानति नाहि तिरीछेहि तानति बान सी आंखें कमान सी भौंहैं ॥ ५१ ॥

अथ अवहित्थ लक्षण दोहा ।

लज्जा गौरव धृष्टता गोपै आकृति कर्म्म ।
और कहै औरे करै सु अवहित्थ को धर्म ॥५२॥

यथा सवैया ।

देखन कों बन को निकसीं बनिता बहु बानि बनाइ कै बागे । देव कहैं दूरि दौरि के मोहन आय गये उत तें अनुरागे ॥ बाल की छाती छुई छल सों घन कुंजन मैं बस पुंजन पागे । पीछे निहारि निहारत नारिन हार हिये के सुधारन लागे ॥ ५३ ॥

अथ मतिलक्षण दोहा ।

शास्त्र चिंतना ते जहां होइ यथारथ ज्ञान ।
करैं शिष्य उपदेश जहँ मतिकहि ताहि बखान॥

यथा सवैया ।

स्याम के संग सदा बिलसी सिसुता मैं सु तामैं कछू नहीं जान्यो । भूलें गुपाल सों गर्व्व कियो गुन जोबन रूप वृथा अरि मानो॥

ज्यों न निगोड़ो तबै समुझो कविदेव कहा
अब जो पछितानो । धन्य जिये जग में अ-
नते जिनको मनमोहन तें मनमानों ॥५५॥

अथ उपालंभ लक्षण दोहा ।

उपालंभ अनुनय विनय अरु उपदेस बखान ।
इनको अंतर भानु कहि देव मध्य मति जान ॥
उपालंभ द्वै भांति को बरनि कहैं कविराइ ।
एक कहावै कोप तें दूजो प्रनय सुभाय ॥५७॥

यथा प्रथम सवैया ।

बोलत हौ कत बैन बड़े अरु नैन बड़े
बड़रान अड़े हौ । जानति हौं छल छैल
बड़े जू बड़े खन के इह गैल गड़े हौ ॥ देव
कहै हरि रूप बड़े ब्रजभूप बड़े हम पै उ-
मड़े हौ । जाउ जू जैयै अनीठ बड़े अरु ईठ
बड़े पर ढीठ बड़े हौ ॥ ५८ ॥

प्रणय यथा सवैया

लाल भले हौ कहा कहिये कहिये तौ कहा
कहूं कोउ कहैये । काहू कहू न कही न सुनी

सु हमैं कहिबे कहि काहि सुनैयै ॥ नैन परे न परे कर मैन न चैन परे जु पै बैन बरैयै । देव कहै नित को मिलि खेलि इतै हित को चित को न चुरैयै ॥ ५६ ॥

अथ अनुनय विनय यथा सवैया ।

वे बड़भाग बड़े अनुराग इतै अति भाग सुहाग भरी हौ । देखौ बिचारि समौ सुख कौ तन जोबन जोतिन सों उजरी हौ ॥ बालम सों उठि बोलौ बलाइ ल्यों यौं काहि देव सयानी खरी हौ । हेरत बाट कपाट लगै हरि बाट खरे तुम खाट परी हौ ॥

उपदेश यथा सवैया ।

कोप सें बीच परै पिय सों उपजावत रङ्ग मे भङ्ग सु भारी । क्रोध बिधान बिरोध निधान सु मान महा सुख मे दुखकारी ॥ ताते न मान समान अकारज जाको अपानु बड़ो अधिकारी । देव कहे कहिहौं हितकी हरि जू सो हितू न कहूँ हितकारी ॥ ५९ ॥

अथ उग्रता लक्षण दोहा ।

दोष कीरतन चौरता दुर्जनता अपराध
निरजनता सो उग्रता जहँ तरजन बध बाध ॥

यथा सवैया ।

मोहन माई भए मथुरापति देव महा मद सों मदमातौ । गोकुल गाँव के गोप गरीब हैं वासु बराबरिही कौ इहां तौ ॥ बैठि रहौ सपनेहू सुन्यों कहूं राजानि सों परजानि सो नातौं । कोरें परे अब कूबरी के हरि याते कियो हमसो हित होतौ ॥ ६२ ॥

अथ व्याधि लक्षण दोहा ।

धातु कोप प्रीतम बिरह अन्तर उपजे आधि ।
जुर बिकार बहुअङ्ग में ताही बरनैं व्याधि ॥

यथा सवैया ।

तांदिन तें अति व्याकुल है तिय जांदिन तें पिय पन्थ सिधारे । भूख न प्यास बिना अजभूषन भासित भूषन भेष बिसारे ॥

पावत पीर नहीं कविदेव करोरिक मूरि सबै करि हारे। नारी निहारि निहारि चलै तजि बेद बिचारि बिचारि बिचारे ॥ ६५ ॥

अथ उन्माद लक्षण दोहा।

प्रिय बियोग तें जह वृथा बचन न लाय बिखाद।
बिन बिचार आचार जहँ सो कहिये उन्माद॥

यथा सवैया।

अरिकै वह आज अकेली गई खरि कै हरि के गुन रूप लुही। उनहू अपनों पहिराय हरा मुसक्याइ के गाइ के गाय दुही॥ कबि-देव कह्यौ किनि काऊ कछू तब तें उनके अनुराग छुही। सबही सो यही कहै बाल-बधू यह देखौ री माल गुपाल गुही ॥ ६७॥

अथ मरन लक्षण दोहा।

प्रगटहि लक्षन मरन के अरु बिभाव अनुभाव।
ओ निदान करि बरनिये तौ सिङ्गार अभाव॥

निर्वेदादिक भाव सब बरने सरस सुभाइ ।
ता बिधि मरनों बरनिये जामैं रस नाहि जाइ ॥

सवैया ।

राधिके बाढ़ी बियोग की बाधा सुदेव अबोल अडोल डरी रही । लोगन की वृषभान के भौन मैं भोर ते भारियें भीर भरी रही ॥ वाके निदान कै प्रान रहे कढ़ि औषधि मूरि करोरि करी रही । चेति मरू करिके चितई जब चारि घरी लों मरी सी धरी रही ॥

अथ त्रासलक्षण दोहा ।

घोर श्रवन दरसन सुमृति तंभ पुलक भयगात ।
छोभ होइ जो चित्त मैं त्रास कहत कवि तात ॥
चित्त छोभ द्वै भांति कौ एक त्रास अरु भीति ।
अकसमात तैं त्रास अरु बिचार तें भयरीति ॥

त्रास यथा सवैया ।

श्रीवृषभानलली मिलिकै जमुना-जल-केलि कों हेलिनु आनी । रोमवली नवली

कहि देव सु सोने से गात अन्हात सुहानी ॥ कान्ह अचानक बोलिउठे उर बाल के व्याल-बधू लपटानी । धाइ कों धाइ गही ससवाइ दुहूं कर झारत अङ्ग अपानी ॥ ७३ ॥

अथ यथा सवैया ।

आजु गुपाल जू बालबधू सँग नूतन नूतने कुञ्ज बसे निसि । जागर होत उजागर नैननि पाग पै पीरी पराग रही पिसि ॥ चोज के चन्दन खोज खुले जहँ ओछे उरोज रहे उरमें धिसि । बोलत बात लजात से जात सु आये इतौत चितौत चहूं दिसि ॥

अथ तर्क लक्षण दोहा ।

बिप्रतिपत्ति बिचारु अरु संसय अध्यवसाइ ।
बितरक चौबिधि जानिये भूखलनाधिक भाइ॥

अथ विप्रतिपत्ति वितर्क यथा सवैया ।

यह तौ कछू भामती कोसौ लसै मुख देखतही दुख जात है है । सफरीमदमोचन

लोचन ये परिहैं कहुं मानों चितौतही च्वै ॥ कवि देव कहै कहिए जुग जो जलजात रहे जल जात मैं ध्वै । न सुने तवौ काहू कहूं कबहूं कि मयंक के अङ्क मैं पङ्कज द्वै ॥७५॥

अथ विचार वितर्क यथा सवैया ।

काम कमान तें बान उतारिहै देव नही मधु माधव रैहै ॥ कोकिलऊ कल कोमल बोल बिसारि के आपु अलोप कहै है ॥ मोहि महा दुख दै सजनी रजनीकर औ रजनी घटि जैहै । प्रानपियारे तु ऐहैं घरै पर प्रान पयान कै फेरि न ऐहै ॥

अथ संसय वितर्क यथा सवैया ।

यह कैधों कलाधरही की कला अबला किधों काम की कैधों सची । किधों कौन के भौन की दीपसिखा सखी कौन के भाल है भाग खची ॥ तिहुँलोक की सुन्दरताई की एक अनूपम रूप की रासि मची । मर

किन्नर सिद्ध सुरासुरहून की बश्वि बधूनि बिरञ्जि रची ॥ ७८ ॥

अथ अध्यवसाय बितर्क यथा सवैया ।

कहु कौन की चम्पक चारु लता यह देखि सबै जन भूलि रहे । कवि देव ए ती में कहा बिलसे बिवसी फल से धरि धूलि रहे ॥ तिहि ऊपर को यह सोम नवोतम तोम चहूँदिस भूलि रहे । चितयें चितु चोरत कोए तहां नव नीलसरोज से फूलि रहे ॥ ७६ ॥

दोहा ।

भरतादिक सत कवि कहैं विभचारी तैंतीस ।
वरनत छल चौतीस यों एक कविन के ईस॥

अथ छल लच्छन दोहा ।

अपमानादिक करन कों कीजे क्रिया छिपाव ।
बक्रउक्ति अन्तर कपट सो बरनै छल भाव ॥

सवैया ।

स्याम सयाने कहावत हैं कहौ आजु को काहि सयानु है दीनो । देव कहै दुरि टेरि

कुटीर मैं आपनो बेर बधू उहि लीनो ॥ चूमि गई मुँह औचकही पटु ले गई पै इन वाहि न चीन्हो । छैल भले छिनही मैं छले दिनही मै छबीली भलो छल कीन्हो ॥ ८२ ॥

छप्पै

सङ्का सूया भयगलानि धृति सुमृति नीद मति । चिन्ता विसमय व्याधि हर्ष उत्सुकता जड़गति ॥ मद बिषाद उन्माद लाज अव हित्था जानौ । सहित चपलता ए विशेष सि-ङ्गार बखानौ ॥ अरु समान मत सम्भोग मैं सकल भाव बरनन करौ । आलस्य उग्रता भाव द्वै सहित जुगुप्सा परिहरौ ॥ ८३ ॥

दोहा ।

आरस ग्लानि निर्वेदश्रम उत्कण्ठा जड़जोग ।
सङ्कापसुमृति सुमृति अव बोधोन्माद वियोग ॥

इति श्रीकवि देवदत्त बिरचिते भावविलासे विशेष सामान्यासिंगार व्यभिचारभाव निरूपणो द्वितीयो विलासः ।

अथ रसनिरूपणम् दोहा ।

जो बिभाव अनुभाव अरु बिभचारिनु करिहोइ।
थिति की पूरन बासना सुकबि कहत रस सोइ॥
जोहि प्रथम अनुराग मै नाहि पूरब अनुभाव ।
तौ कहिये दम्पतिनु के जन्मन्तर के भाव ॥
ताहि बिभावादिकन ते थिति सम्पूरन जानि ।
लौकिकऔर अलौककहि द्वैबिधिकहतबखानि॥
नयनादिक इन्द्रियनु के जोगहि लौकिक जानु।
आतम मन संजोग तें होय अलौकिक ज्ञानु॥
कहतअलौकिकतीनिबिधिप्रथमस्वापनिकमानु।
मानोरथ कविदेव अरु ओपनायक बखानु ॥

स्वापनिक यथा सवैया ।

सोइ गई अभिलाष भरी तिय सापने में निरखे नन्दनन्दन । देव कछू हँसि बात कही पुलके सु हिये झलके जल के कन ॥ जागि परी नवनूढ़ बधू ढिग ढूढ़ति गूढ़ सनेहसनी धन । सोच सकोच अगोचर तीय त्रसे बिलसै बिहसै मनही मन ॥ ६ ॥

मानोरथिक यथा सवैया।

कालिंदी कूल भयो अनुकूल कहूं घरबार घिरो नहि घेरौ। मंजुल बंजुल साल रसाल तमालनि के बन खेत बसेरौ॥ केलि करे री कदम्बनि बीच जु कानन कुञ्ज कुटीन मैं टेरौ। मोहन लाल की मूरति के सँग डोलत माई मनोरथ मेरौ॥ ७॥

औपनायको यथा सवैया।

झूमक रैन जसोमति के जुबतीन कौ आज समाज सिधायो। स्याम कौ सुंदर भेष बनाइ कै आइ बधू इक बेनु बजायो॥ हास मैं रास रच्यो कबि देव बिलास कें ही मैं हुलास बढ़ायो। नाचत वाहि सखी सबही के हिये सुखसिन्धु कौ पार न पायौ॥ ८॥

अथ लौकिक रस दोहा।

कहतसुलौकिकत्रिबिधबुधयहबिधिबुधिबलसार।
अबबरनत कबिदेवकहि लौकिक नवसुप्रकार॥

षट्पदी।

प्रथम होइ सिंगार दूसरो हास्य सु जानौ।
तीजौ करुना कहौ चतुरथौ रौद्र सु मानौ॥
बीर पांचवों जानि भयानक छठौ बखा-
नौ। सतयों कहि बीभत्सु आठओं अद्भुत
आनौ॥ येहि भांति आठ बिधि कहत
कवि नाटकमत भरतादि सब। अरु सात
यतन मत काव्य के लौकिक रस के भेद नव॥

दोहा।

सकल सार सिंगार है सुरस माधुरी धाम।
स्यामहि के बर्नन बरन दुक्ख हरन अभिराम॥
ताही तें सिङ्गार रस बरनि कह्यो कबि देव।
जाकौ है हरि देवता सकल देव अधिदेव॥

अथ सिंगार लक्षण दोहा।

आपुस में तिय पुरुष के पूरन रति जो होइ।
ताही सों सिंगार रस कहत सु कबि सब कोइ॥

सवैया।

बारक द्वार तुम्हें लखिकै सखि लाल के लोयन लोल रहे लुभि। आजु इतै पर भेंट भई यह रीझ रही कविदेव खरी खुभि॥ तौसिय तूं चितई हँसि वे सु रहे छकि नैनन की छबि सों छुभि। नेह भरी यह प्यारी तिहारी तिरौंछी चितौनि गई चित में चुभि॥

दोहा।

द्वै प्रकार सिंगार रस है संभोग बियोग।
सो प्रछन्न प्रकाश करि कहत चारि बिधि लोग॥
देव कहै प्रछन्न सो जाकौ दुरौ बिलास।
जानहिं जाकों सकल जन बरनैं ताहि प्रकास॥

अथ प्रछन्नसंभोग सवैया।

बाजि रही रसना रस केलि में कोमल के बिछियानु की बानी। प्यारी रही परजङ्क निसंक पै प्यारे के अंक महासुख सानी॥ भौं पर चांपि चढ़ी उतरी रंग रावटी आवत

जात न जानी। छोल छिपाइ नु खोलि हियो कविदेव दुहूं दुरि के रति मानी ॥ १७ ॥

अथ प्रकाससम्भोग कवित्त ।

सोंधे की सुवास आसपास भरि भवन रह्यो भरत उसांस बास बासन बसात है। कंकन झनित अगनित रव किंकिनी के नूपुर रनित मिले मनित सुहात है ॥ कुण्डल हिलत मुखमण्डल झलमलात हिलत दुकूल भुजमूल भहरात है। करत बिहार कविदेव बार बार बार छूटि छूटि जात हार टूटि टूटि जात है ॥ १८ ॥

दोहा।

नारिन के संभोग तें होत बिबिधविधि भाव ।
तिन में भरतादिक सुकवि बरनत हैं दसहाव ॥

षट्पदी ।

पहिलें लीलाहाव बहुरि सुबिलास बरानिये ।
तातें कउ बिछित्ति बहुरि बिभ्रम कहि गानिये ॥

किलकिंचित तब कह्यौ तबै मौटा इतु मानौ।
तातें कहु कुटमित्त बहुरि बिब्बोकहु जानहु॥
कविदेव कहें फिरि ललित कहु तातें बिहृत
कहें सरस। इह भांति विविधविधि बिबुधवर
बरनत कबिवर हाव दस॥ २०॥

अथ लीलालक्षण दोहा।

कौतुक तें पिय की करै भूषन भेष उन्हारि।
प्रीतम सों परिहास जहँ लीला लेउ बिचारि॥

सवैया।

कालि भटू बनसीबट के तट खेल बड़ौ
इक राधिका कीन्हो। सांझनि कुंजनि मांझ
बजायो जु स्याम को बेनु चुराइ कैं लीन्हो॥
दूरि तें दौरत देव गए सुनि के धुनि रोसु महा
चित चीन्हो। संग की औरैं उठीं हंसि कैं
तब हेरि हरे हरि जू हँसि दीन्हों॥ २२॥

अथ बिलास दोहा।

प्रियदरसनुसुमिरनुश्रवनुजहँअभिलाषप्रकास।
बदन मगन नयनादिकौ जो विशेष सुबिलास॥

आजु अटा चढ़ि आई घटानु में बिज्जु छटासी बधू बनि कोऊ। देव त्रिया कविदेवन केतिये एतौ हुलास बिलास न वोऊ ॥ पूरन पूरब पुन्यन तें बड़भाग बिरंच रच्यौ जन सोऊ। जाहि लखैं लघु अंजन दै दुख-भंजन ये दृगखंजन दोऊ ॥ २४ ॥

अथ बिछित्तिबरननं दोहा।

सुहाग रिस रस रूप तैं बढ़ै गर्व्व अभिमान।
थोरेई भूषन जहां सो विछित्ति बखान ॥२५॥

यथा सवैया।

भाग सुहाग को गर्व्व बढ़ौ सु रहै अभि-मान भरी अलबेली। वेसरि बंदिन केसरि खौरि बनावै न सेन्दुर रंक सुहेली ॥ भू-लेहूं भूषन बेषु न और करै कहि देव विलास की बेली। मोहनलाल के मोहन कौ यह पैंधति मोहनमाल अकेली ॥ २६ ॥

अथ विभ्रमलक्षण दोहा।

उलटे जहँ भूषन वचन वेष हंसै जन जाहिं।
भाग रूप अनुराग मद विभ्रम वरनै ताहि ॥

सवैया।

स्याम सों केलि करी सिगरी निस सोत तें प्रात उठी थहराइ कैं। आपने चीर के धोखे बधू पहिर्‌यो पटुपीत भटू भहराय कैं॥ बांधि लई कटि सों बनमाल न किंकिनि बाल लई ठहराइ कैं। राधिका की रसरंग की दीपाति संग की हेरि हँसी हहराइ कैं ॥२८॥

अथ किलकिंचित दोहा।

किलकिंचित मैं चपलता नाहिं कारज निरधार।
समदमभयअभिलाषरुखसुमितगर्व्वइकबार ॥

सवैया।

पाँइ परे पलिका पै परी जिय संकति सोतिन होति न सौंहीं। ऐंचि कसी फुँफुदी की फुंदी भुज दाबी दुहू छतियां हुलसौंहीं॥ कांपि कपोलनि चांपि हथोरनि झांपि रही

मुख डीठि लसौंहीं । त्यों सकुचौंही उचौंही रुचौंही ससोंही हंसोंही रिसोंही रसोंहीं ॥३०॥

अथ मोटाइत दोहा ।

सौति त्रास कुललाज तें कपट प्रेम मनहोइ ।
सुमुख होइ चित बिमुख हू कहौ मोटायितु सोइ ॥

सवैया ।

राधिका रूठी कछू दिन तें कबिदेव कछू न सुने कछु बोले । नैकु चितौति नहीं चितु दै रस हास किये हूं हियेहू न खोले ॥ आवति लोक की लाज के काज यही मिस सौतिन को सुख छोले । स्याम के अंग सौं अंग लगावे न रंग में संग सखीन के डोले ॥

अथ कुटमित दोहा ।

कुच ग्राहन रददान तें उतकण्ठा अनुराग ।
दुखहू में सुख होइ जँह कुटामित कहैं सभाग ॥

सवैया ।

नाह सों नाहीं करे सुख सों सुख सों रति केलि करै रतिया में । देत रदच्छद सी-

सी करै कर ना पकरै पै बकै बतिया मैं ॥ देव किते रति कूजित के तन कम्प सजे न भजे छतिया मैं। जानु भुजानहू कों भहरावति आवते छैल लगी छतिया मैं ॥३५॥

अथ बिब्बोक दोहा ।

प्रिय अपराध धनादि मद उपजै गर्व्व कि बारु।
कुटिल डीठि अवयव चलन सोबिब्बोकबिचारु॥

सवैया ।

स्यामले सौति के संग बसे निसि आँगनि वाही के रंग रचाइ कै। आए इतै परभात लजात से बोलत लोचन लोल लचाइ कै॥ देव कों देखि कै दोषभरे तिय पीठि दई उत डीठि बचाइ कै। ज्यों चितई अरसोंहें रिसोहें सुसोहें सखीन के भौहें नचाइ कै॥३६॥

अथ ललितलक्षण दोहा ।

मन प्रसादपति बस करन चमत्कार चितहोइ।
सकल अंग रचना ललित ललित बखानै सोइ॥

कवित्त ।

पूरि रहे पहिले पुर कानन पौन के गौन सुगन्ध समाजनि । गान सों गुंज निकुंज उठे कविदेव सुभौरनि की भई भाजनि ॥ दूरि तें देखी मसाल सी बाल मिली मुख भूषन बेष बिराजनि । जानि परी वृषभान-सुता जब कान परी बिछियान की बाजनि ॥

अथ बिहितलक्षण दोहा ।

व्याज लाज तें चेष्टा और और बिचारु ।
पूरे पिय अभिलाष तिय ताही बिहित बिचारु ॥

सवैया ।

वृषभान की जाई कन्हाई के कौतुक आई सिंगार सबै सजि कैं । रस हास हुलास बि-लासनि सों कविदेव जू दोऊ रहे राजि कैं ॥ हरि जू हँसि रंग मैं अंग छुयो तिय संग सखीनहू कौ तजि कैं । उठि धाई भटू भय के मिसि भामती भीतरे भौन गई भाजि कैं ॥४०॥

इति व्याजबिहित ।

अथ लाजबिहित सवैया ।

भेंट भई हरि भावते सों इक ऐसे मैं आली कह्यो बिहँसाइ कैं । कीजे लला रस केली अकेली ए केली के भौन नवेली कों पाइ कैं ॥ भौंहें भ्रमाइ कछू इतराइ कछूक रिसाइ कछू मुसक्याइ कैं । खेंचि खरी दई दौरि सखी के उरोजनि बीच सरोज फि-राय कैं ॥ ४१ ॥

इति संभोगसिंगार हाववर्णनं समाप्तम् ।

अथ बियोगसिंगार दोहा ।

सुहृद श्रवन दरसन परस जहां परस्पर नाँहि ।
सो बियोग सिंगार जँह मिलन आस मनमांहि ॥
कहुँ पूरब अनुराग अरु मान प्रवास बखान ।
करुना तम इह भांति करि बियोग चौविधिजान ॥

अथ पूर्वानुराग दोहा ।

दंपतीन के देखि सुनि बढ़े परस्पर प्रेम ।
सो पूरब अनुराग जहँ मन मिलिबे कौ नेम ॥ ४४ ॥

सवैया ।

देवजू दोऊ मिले पहिले दुति देखतही तें लगे दृग गाढ़े । आगेही तें गुन रूप सुने तबही तें हिये अभिलाषहि बाढ़े ॥ ता दिन तें इत राधे उतै हरि आधे भये जू बियोग के बाढ़े । आपने आपने ऊंचे अटा चढ़ि द्वारनि दोऊ निहारत ठाढ़े ॥ ४५ ॥

इति दरसनपूर्वानुराग ।

अथ श्रवणपूर्वानुराग यथा सवैया ।

सुन्दरता सुनि देव दुहूँ के रहे गुन सों गुहि के मनमोती । लागे हैं देखिबे कों दिन राति गिने गुरुहू नहि सौकिन गोती ॥ देव दुहूँ की दहै बिनु देखें सु देखें दसा निसि सोवति को ती । होती कहा हरि राधिका सों कहूँ नैकौ दई पहिचानि जो होती ॥ ४६ ॥

इति श्रवनपूर्वानुराग यथा सवैया ।

बाल लतान में बाल कौ बोल सुन्यों कहुँ संग सखीन के टेरत । काहू कही हरि राधा

यही दुरि देवजू देखी इतै मुख फेरति ॥ है तब तें पल एक नहीं कल लाखनि लों अभिलाखनि घेरत । वाही निकुंजहि नंद-कुमार घरीक में बार हजारक हेरत ॥४७॥

इति श्रीकृष्ण को पूर्वानुराग ।

अथ राधा जू की पूर्वानुराग सवैया ।

सांसनिही सो समीरु गयो अरु आँसु-नही सब नीर गयो ढरि । तेज गयो गुन लै अपनों अरु भूमि गई तनुकी तनुता करि ॥ देव जियै मिलिवेही की आस कि आसहू पास अकास रह्यो भरि । जा दिन तें मुख फेरि हरै हँसि हेरि हियो जू लियो हरि जू हरि ॥ ४८ ॥

अथ दसावस्था षटपदम् ।

प्रथम कहो अभिलाष बहुरि चिन्ता सु-मिरन कहु । तातें है गुनकथन बहुरि उद्वे-गहि बरनहु ॥ फिरि प्रलाप उन्माद व्याधि

अरु जड़ता जानौ । बहुरि मरन यह भाँति अवस्था दस उर आनौ ॥ ए होंइ पूर्व अनुराग मै दोउन के कवि देव कहि । अरु एक मरन बरनत न कबि जो बरनै तौ रसहि गहि ॥ ४६ ॥

दोहा ।

चिन्ता जड़ता व्याधिअरु सुमिरनमरनुंन्माद ।
सञ्चारिन मैं हैं कहे दम्पति बिरह बिषाद ॥

अथ अभिलाष लक्षण दोहा ।

प्रीतम-जन के मिलन की इच्छा मन में होय ।
आकुलता सङ्कल्प बहु कहु अभिलाष जु सोय ॥

सवैया ।

पहिले सतराइ रिसाइ सखी जदुराइ पै पाइ गहाइय तो । फिरि भेंटि भटू भरि अंक निसङ्क बड़े खन लौं उर लाइय तो ॥ अपनो दुख औरनि कौं उपहासु सबै कबि देव बताइय तो । घनश्यामहिं नैकहु एक घरी कौ इहां लगि जो करि पाइय तौ ॥५२॥

अथ गुन कथन दोहा ।

प्रियके सुन्दरतादि गुन बरने प्रेम सुभाइ ।
साभिलाष जो गुनकथन बरनत कोबिदराइ ॥

सवैया ।

दामिन ह्वै रहिये मन आवत मोहन को घन सौ तन घेरे । वाही कौ देखिये री दिन रातिहू कोई करौ किनि कोटि करेरे ॥ श्याम की सुन्दरताई कहौं कछु होहिं जो जीभ हजारन मेरे । केवल वा मुख की सुखमा पर कोट ससी गहि वारि के फेरे ॥ ५४ ॥

अथ प्रलाप दोहा ।

अतिउतकण्ठामनभ्रमनपियजनही को लाप ।
देव कहै कोविद सबै बरनत ताहिं प्रलाप ॥

सवैया ।

पुकारि कही मैं दही कोइ लेउ यही सुनि आइ गयो उत धाई । चितै कवि देव चलेई चले मनमोहना मोहनी तान सी गाई ॥

न जानति और कछू तब तें मन माहि वही पै रही छबि छाई ॥ गई तौ हती दधि बेचन बीर गयो हियरा हरि हाथ बिकाई ॥

दोहा ।

जहँ प्रियजन के अनमिलें होइ अनादर प्रान ।
भली बस्तु नागा लगे सो उद्वेग बखानु ॥

कबित्त ।

बिरह के घाम ताई बाम ताजि धाम धाई पाई प्रति कूल कूल कालिंदी की लहरी । यातें न अन्हाई जैरे जोबन जुन्हाई तातें चितै चहुँओर देव कहै यहै हहरी ॥ बारिज बरत बिन बारें बारि बारु बीच बीच बीच बीचिका मरीचिका सी छहरी । चण्ड मारतण्ड के अखण्ड बृजमण्डल है कातिक की राति किधों जेठ की दुपहरी ॥ ५८ ॥

इति दसावस्था पूर्बानुराग बियोग ।

अथ मान वियोग दोहा ।

पति परपतिनीरतिकरतपतिनीकराते जु मान।
गुरु मध्यम लघुभेदकरि ताहूत्रिबिधि बखान॥
पतिपरपरतियचिन्हलखकरातित्रियागुरुमान ।
मध्यम ताकौ नाम सुनि ता दरसन लघु जान॥

गुरुमान मोचन सवैया ।

सौति की माल गुपाल गरे लखि बाल कियो मुख रोष उज्यारो । भौंहे भ्रमी करि कै अधरा निकस्यो रँग नैननि के मग न्यारो। त्यों कवि देव निहारि निहोरि दोऊ कर जोरि पर्यौ पग प्यारौ । पी कों उठाइ कैं प्यारी कह्यो तुम से कपटीन कौ काहि पत्यारो ॥६१॥

अथ मध्यम मान मोचन उदाहरन सवैया ।

बाल के सङ्ग गुपाल कहूं निस सोत मैं सौति कौ नाम उठे पढ़ि । यों सुनिकैं पटु तानि परी तिय देव कहे इमि मान गयो बढ़ि ॥ जागिपरी हरि जानी रिसानी सी

सौंहैं प्रतीति करी चित मैं चढ़ि । आंसुन सो संताप बुझ्यौ अरु सांसन सो सब कोप गयो कढ़ि ॥ ६२ ॥

अथ लघुमानमोचन उदाहरण सवैया ।

बैठे हुते रँगरावटी मैं जिनके अनुराग रँगी वृज भूम्यो । किंकिनि काहू कहूँ झनकाइ सुझाकन काहू झरोखे है झूमो ॥ देव परत्रिय देखत देखि के राधिका कौ मनु मान सौ घूम्यो । बातें बनाइ मनाइ के लाल हँसाइ के बाल हरें मुख चूम्यो ॥ ६३ ॥

मानमोचन यथा दोहा ।

साम दाम अरु भेद करि प्रनति उपेछा भाइ ।
अरु प्रसंग बिभ्रंस ये मोचन मान उपाइ ॥६४॥
साम क्षमापन कौं कहैं इष्टदान कौं दान ।
भेद सखी संमत मिलै प्रनति नम्रता जान॥६५॥
वचन अन्यथा अर्थ जहँ सुनु पेच्छा की रीति।
सो प्रसंग बिभ्रंस जहँ अकस्मात सुख भीति ॥

सवैया ।

आपनोई अपमान कियो पहिराइबे कों मनिमाल मँगाई । लै मिलई मिस सों कुसखी करि पाय परेऊ न प्रीति जगाई ॥ केतिक कौतिक वाते कहीं कवि देव तऊ तिय तोरी सगाई । आजु अचानक आइ लला डरवाइ कें राधिका कण्ठ लगाई ॥ ६७ ॥

दोहा ।

या बिधि छऊ उपाय हैं न्यारे न्यारे जान ।
लाघव तें एकत्रही सब को कियो बखान ॥६८॥
देसकाल सविशेष लखि देखि नृत्य सुनि गान ।
जातु मनायेहूं विना मानि तीनु कौ मान ॥६९॥

सवैया ।

रूठि रही दिन द्वैक तें भामिनि मानी नहीं हरि हारे मनाइ कै । एक दिना कहूं कारी अँधारी घटा घिरि आई घनी घहराइ कै ॥ और चहूं पिक चातक मोर के सोर सुने सु उठी अकुलाइ कै । भेटी भटू उठि

भामत को घन धोखेहीं धाम अँधेरे मैं धाइ के ॥ ७० ॥

अथ प्रवासबियोगलक्षन दोहा ।

प्रीतम काहू काज दै अवधि गयो परदेस ।
सो प्रबास जहँ दुहुन कौ कष्टक हैं बिबुधेस ॥

सवैया ।

लाल बिदेस सु बालबधू बहु भांति बरी बिरहानलही मैं । लाज भरी ग्रहकाज करै कहि देव परे न कहूं कलही मैं ॥ नाथ के हाथ के हेरि हरा हिय लागि गई हिलकी गलही मैं । आँखिन के अँसुवा लखि लोगनि लीलि लजीली लिये पलही मैं ॥७२॥

देव कहै बिन कन्त बसन्त न जाँउ कहूं घर बैठि रहौंरी । हूक हिये पिक कूक सुने विषपुंज निकुंजनी गुंजति भौंरी ॥ नूतन नूतन के बन बेषन देखन जाती तौ हौं दुरि दौरी। बीर बुरौ मति मानो बलाइ ल्यों हौंहुगी बौर निहारत बौरी ॥ ७३ ॥

कबित्त ।

जागी न जुन्हैया यह आगी मदनज्वर की लागी लोक तीनों हियो हेरें हहरतु है। पारि पर जारि जल जन्तु जारि बारि बारि बारिधि ह्वै बाडव पताल पसरतु है॥ धरती तें धाइ झर फूटी नभु जाइ कहै देव जाहि जोवत जगत ज्यों जरतु है। तारे चिनगारे ऐसे चमकत चारौ ओर बैरी बिधुमण्डल बभूकौ सो बरतु है॥ ७४॥

सवैया ।

ब्याकुलही बिरहाज्वर सों सुभ पावनि जानि जनीनु जगाई। घोरि घनारंग केसरि कौ गहि बोरि गुलाल के रंग रँगाई॥ त्यों तिय सांस लई गहरी कहिरी उनसों अब कौन सगाई। ऐसे भये निरमोही महा हरि हाय हमें बिनु होरी लगाई॥ ७५॥

अथ नायकबियोग सवैया ।

सुधाधर से मुख बानिसुधा मुसक्यानि

सुधाबरसै रद पांति। प्रबाल से पानि मृनाल भुजा कहि देव लतान की कोमल काँति ॥ नदी त्रिबली कदली जुग जानु सरोज से नैन रहे रस मांति। छिनों भरि ऐसी तिया बिछुरे छातियां सियराइ कहौं किहि भांति ॥७६॥

इति प्रवास।

अथ करुनात्मकवियोग दोहा।

दम्पतीन में एक के विषम मूरछा होइ।
जहँ अति आकुल दूसरौ करुना तम कहि सोइ॥

कवित।

कन्त की बियोगिन बसन्त की सुनत बात व्याकुल ह्वै जाति बिरहज्वर सों जरि कैं। देव जू दुरन्त दुखदाई देखौ आवतु सो तामैं तुम्हें न्यारी भई प्यारी जैहै मरि कैं॥ एती सुनि प्यारे कह्यौ हाय हाय ऐसी भयें होय अपराधी कौन कहौ सो सुधरि कैं। हरि जू तौ हेरि जौलों फेरि कहैं दूती कछु टेरि उठी तूती तौलौं तुही तुही करि कैं॥ ७८ ॥

इति लघु।

अथ मध्यम सवैया।

गोकुल गांव तें गौन गोपाल को बाल कहूं सुनि आई अली पर। व्याकुल ह्वै बिरहानल सों तजि घूमि गिरी गुन गौरि गलीपर॥ हाइ पुकारत धाइ गये न सम्हारत वे थिरु नाहि थली पर। जानि न काहू की कानि करी हरि आनिगिरे वृषभान ललीपर॥

इति मध्यम।

कालिय कालि महाविष व्याल जहां जल ज्वाल जरै रजनी दिनु। ऊरध के अध के उबरें नहीं जाकी बयारि बरै तरु ज्यों तिनु॥ ता फनि की फन-फांसिनु पै फँदि जाइ फँसै उकसै न कहूं छिन। हा वृजनाथ सनाथ करौ हम होती अनाथ पै नाथ तुम्हें विनु॥

इति दीर्घ दोहा।

जहां आस जिय जिअन की सो करुना तमजानु।
जामें निहचै मरन को करुना ताहि बखानु॥८१॥

करुनातम सिंगार जहँ रति अरु सोक निदानु।
केवल सोक जहां तहां भिन्न करुन रसु जानु ॥
या विधि बरनत चारि विधि रस बियोग सिंगारु।
यातें कहे न और रस बाढ़ै बहु बिस्तारु ॥८३॥
रस संभोग बियोग को यह बिधि करउँ बखानु।
या रस बिनु सबरस बिरस कवि सब नीरसजानु॥
इति श्रीदेवदत्तकविविरचिते भावविलासे संभोग वियोग सिंगार रस बरननं नाम तृतीयो विलासः । ३ ।

अथ नायक नायका बिचार दोहा।

भाव सहित सिंगार कौ जो कहियतु आधारु।
सो है नायक नाइका ताकौ करत बिचारु ॥१॥

अथ नायकभेद दोहा।

नायक कहियतु चारिबिधि सुनत जात सब खेद।
चौरासी अरु तीनि सै कहत नायकाभेद ॥२॥
प्रथम होइ अनुकूल अरु दच्छिन अरु सब धृष्ट।
या बिधि नायक चारि बिधि बरनत ज्ञान गरिष्ट॥

अथ अनुकूलनायकलच्छण दोहा।

निज नारी सनमुख सदा बिमुख बिरानी बाम।
नायक सो अनुकूल है ज्यों सीता कों राम ॥४॥

सवैया ।

पीतपटी लै कुटी लपटी रहैं छैल छरी लों खरी पकरी हैं। कान्ह के कण्ठ की कण्ठी भई बनमाल ह्वै बाल हिये पसरी है॥ कान्ह लगी कविदेव ह्वै कुण्डल बांसुरी लों अधरानु धरी है। मूड़ चढ़ी सिरमौर ह्वै री गहनो सब ग्वालि गुपाल करी है ॥ ५ ॥

अथ दक्षिण नायक दोहा।

सब नारिन अनुकूल सों यही दक्ष की रीति।
न्यारी ह्वै सब सों मिलै करै एकसी प्रीति ॥६॥

सवैया ।

सौगुने सील सुभाइ भरे जिनके जिय आगुन एक न पावै । मेरिये बात सुनै समुझै मनभावन मोहि महा मन भावै ॥ देव को चित्त चितौनिन चंचल चंचलनैनी कितो चितवावै। आँखि हू राखिहू नाखर कें हरि क्यों तिन्हें लीक अलीक लगावै ॥७॥

अथ सठ लक्षण दोहा ।

आगे आपनु ह्वै रहै पीछे करै चवाव ।
दोष भरो कपटी कुटिल सठको यही सुभाव ॥

सवैया ।

राति रहै रति मानि कहूँ अरु दोष भरौ नितही इत आवै । जो कहिये कि कहा है कहौ तब झूठी हजारुक बातें बनावै ॥ और सी और के आगे कहै कवि देवजू मेरी सी मोहि सुनावै । या सठ कों हटको न भटू उठि भोर की वार किवार खुलावै ॥ ६ ॥

अथ धृष्ट लक्षण दोहा ।

दोष भरो प्रत्यक्षही सदा कर्म अपकृष्ट ।
सहै मार गारी रहै निलज पांइ परि धृष्ट ॥

सवैया ।

द्वार तें दूरि करौं बहुबारनि हारनि बांधि मृनालनि मारो । छाड़तु ना अपनो अपराधु असाधु सुभाइ अगाधु निहारो ॥ बैरिन मेरी हँसै सिगरी जब पांइ परै सु टरै नहिं टारो ।

ऐसे अनीठ सों ईठ कहै यह ढीठ बसीठ नही को बिगारो ॥ ११ ॥

इति नायक भेद ।

अथ नर्म सचिव दोहा ।

दूरि होइ जा बात मैं मानवतिन को मान ।
सोई सोई जौ कहै पीठिमरद सुवखान ॥

सवैया ।

देखि जिन्हें उमगे अनुराग सु फूलि रहौ बनबाग चहूं है । मानु तजौ री पुकारि पिकी कहै जोबन की करिबेन अहूँ है ॥ सोर करें सब ओर अलीगनकोप कठोर हियें अजहूँ है । देखौ जू बूझि मने अपने हू को ऐसो समौ सपने हू कहूँ है ॥ १४ ॥

अथ विट् दोहा ।

बचनचातुरी कों रचै जानै सकल कलानि ।
ताहीसोंविटुसचिवकहिकविवरकहतबखानि॥

सवैया ।

जाहि जपै त्रिपुरारि मुरारि सबै असुरारि

सुरारि हने हैं। जाके प्रताप त्रिलोक तचै न बचै मुनि सिद्धि समाधि सने हैं ॥ ताहि डरै नहि तूँ सजनी उत आतुर वे कविदेव घने हैं। मेरौ मनायो तूँ मानि लै मानिन मैत महीप के मान मने हैं ॥ १६ ॥

अथ विदूषक दोहा ।

अङ्ग भेष भाषानुकरि करै अन्यथा भाइ ।
ताहि विदूषक कहत जो देइ हांस के दाइ ॥

सवैया ।

ऊंक सो वो रहिहै अभई ऊं विलोकत भूमि पै घूमि गिरोंगी। तीर सौ सीरौ समीर लगे तें सरीर में पीर घनीये घिरोंगी ॥ मेरो कह्यौ किन मानती मानिन आपुही तें उतकों उनिरोंगी । भौन के भीतरहीं भ्रम भोरी लों बौरी लों नेक में दौरी फिरोंगी ॥

इति नर्मसचिव ।

अथ नायका बिचार दोहा ।

नायकनर्म सचिव कहे यह बिधि सब कविराय।
अब बरनत हौं नायका लच्चण भेद सुभाइ॥१६॥
तीनि भांति कहि नाइका प्रथम स्वकीया होइ ।
परकीया सामान्या कहत सुकवि सब कोइ॥२०॥

अथ स्वकीया लच्चण दोहा ।

जाके तन मन वचन करि निज नायकसों प्रीति।
विमुख सदा पर पुरुषसों सो स्वकिया कीरीति॥

सवैया ।

कविदेव हरे बिछिया नु बजाइ लजाइ
रहे पग डोलनि पै। गुरु डीठि बचाइ लचाइ
के लोचन सोचनि सों मुख खोलनि पै ॥
हँसि हौंस भरे अनुकूल विलोकनि लाल के
लोल कपोलनि पै । बलि हो बलिहारी हौं
बार हजारक बाल की कोमल बोलनि पै ॥

दोहा ।

मुग्धा मध्या प्रगल्भा स्वकिया त्रिविधिबखानु ।
सिसुता मैं जोबना मिलै मुग्धा सो उर आनु ॥

अथ मुग्धा भेद दोहा ।

वयः सन्धि अरुनव बधू नवजोबना बिचारु।
नवलअनङ्गा सलज रति मुग्धा पांच प्रकार ॥

वयःसन्धि यथा सवैया ।

औरनु के अंग भूषन देखि सुहोंसानि भू-
षन बेष सकेलै । मन्द अमन्द चलै चितवै
कविदेव हंसै बिलसै बपु बेलै ॥ फूल बिथोरि
के बारनु छोरि कें हारनु तोरि उतै गहि
मेलै । मूरि के भाव बिसूरि सखीनु कों दूरि
तें दूरि कें धूरि में खेलै ॥ २५ ॥

नववधू यथा सवैया ।

गोकुल गांव की गोप सुता कविदेवन
केतिक कौतिक ठाने । खेलत मोही पै नंद
कुमार री बारहि बार बड़ाई बखाने ॥ मो-
रिये छाती छुवें छिपि कें मुख चूमि कहै
कोई और न लाने । काहे तें माई कछूदिन
तें मनमोहन कौ मनमोही सों माने ॥२६॥

नवजोवना यथा सवैया ।

जानति ना बहु कौ बड़ भाग बिरंच रच्यौ रसिकाई बसी है। देव कहैं नवबेस बसन्त-लता फल जाके नवक्षत दी है ॥ मेटि बि-योग समैटि सबै सुख सों भरि भेंटि भटू जुग जीहै। या मुख सुद्ध सुधाधर तें अधरा रसधार सुधारस पीहै ॥ २७ ॥

नवलग्रनङ्गा यथा सवैया ।

कालि परों लगि खेलतहीं कबहूं न कहूं यह घूंघट काढ्यो। आजुहीं भौंह मरोरि चली तनु तोरि जनावति जोबन गाढ्यो ॥ नैननि कोटि कटाच्छ करै कविदेव सुबैननि को रस बाढ्यो। नेकु जितै चितवै चित दै तित मैन मनों दिन द्वैक कौ ठाढ्यो ॥ २८ ॥

अथ सलज्जरति सवैया ।

कूजत हैं कलहंस कपोत सुकी सुक सोरु करैं सुनि ताहू। नैकहू क्यों न लला सकुचौ

जिय जागत हैं गुरु लोग लजाहू ॥ हाथ गह्यो न कह्यो न कछू कविदेव जू भौन में देखौ दियाहू । हाहा रहौ हरि मोहि छुश्रौ जिनि बोलत बात लजात न काहू ॥२६॥

अथ मुग्धासुरत सवैया ।

खाट की पाटी रहै लपिटाइ करौंट की ओर कलेवर कांपै । चूमत चौंकति चन्दमुखी कविदेव सुलोल कपोलनि चांपै ॥ बालबधू बिछियान के बाजतें लाज तें मूँदि रहै अंखिया पै । आंसू भरे सिसके रिसके मिसके कर झारि झुके मुख झांपै ॥ ३० ॥

अथा मुग्धासुरतांत सवैया ।

मनभावते के ढिग तें उठि भामिनि भोरहीं भूषन हाथ लिये । रंगभौन के भीतर भाजि परी भय भार भरी अति लाज हिये ॥ सजनी जन तें दुरि कें कविदेव निहारति हार बिहार किये । तिय बारहीबार सँवारतिही निरवारति बार किवार दिये ॥ ३१ ॥

अथ मुग्धामान सवैया।

सौति कु मान लियो सपने कहूं सौति को सङ्ग कियो पिय जाइकै। देव कहै उठि प्यारे की सेज तें न्यारी परी पिय प्यारी रिसाइ कै॥ नाह निसङ्क गही भरि अङ्क सुले परजङ्क धरी धन धाइकै। आंसुन पोंछि उरोज अँगौछि लई मुख चूमि हिये सों ल-गाइके॥ ३२॥

अथ मध्या स्वकीया लक्षण दोहा।

जाके होंहिं समान द्वै इक लज्जा अरु काम।
ताकों कोविद कवि सबै बरनत मध्या नाम॥

सोरठा।

रूढ़जोबना नाम, प्रादुर्भूतमनोभवा।
प्रगल्भ वचना वाम, हैं विचित्र सुरता बहुरि॥

दोहा।

मध्या चार प्रकार की यह विधि बरनत लोइ।
उदाहरन तिनको सुनौ जाको जैसो होइ॥

अथ छुद्रयौवना सवैया ।

राधिका सी सुर सिद्ध सुता नरनाग सुता कवि देवन भूपर । चंद करौं मुख देखि निछावरि केहरि कोटि लटो कटि ऊपर ॥ काम कमानहुं को भृकुटीन पै मीन मृगीन हूँ को दृग दूपर । वारों री कञ्चन कञ्जकली पिकवैनी के ओछे उरोजन ऊपर ॥ ३६ ॥

अथ प्रादुर्भूत मनोभवा सवैया ।

बालबधू के बिचार यही जु गुपाल की ओर चितैवोइ कीजे । त्यों चितवै चित चातुरी सों रुचि की रचना बचनामृत पीजे ॥ भूषन भेष बनावै सबै अरु केसर के रँग सों अँग मींजै । आपने आगे औ पीछे तिरीछे है देह को देखि सनेह सों भींजै ॥३७॥

अथ प्रगल्भ बचन कवित्त ।

मेरेऊ अङ्क जो आवै निसङ्क तो हौं उनके परजङ्कहि जैहों । पान खवाइ उन्हें प-

हिलैं तब नाथ के हाथ के पाननि खैंहों ॥ ऐसी न होइ जू देह की दीपति देव कों दीप समीप देखैहों । मोहन को मुख चूमि भटू तब हों अपनो मुख चूमन देहों ॥३८॥

विचित्र सुरता यथा सवैया ।

केलि करे रसपुञ्ज भरी बनकुञ्जन प्यारे सों प्रीति के पैनी । झिल्लिन लों झहनाइ के किङ्किनि बोलें सुकी सुक कों सुखदैनी ॥ यों बिछियान बजावति बाल मराल के बालनि ज्यों मृगनैनी । कोमल कुंज कपोत के पोत लों कूँकि उठे पिक लों पिकबैनी ॥ ३९ ॥

अथ मध्या सुरत सवैया ।

जागतही सब जामिनी जाइ जगाइ म- हामदन ज्वर पावक । अंजन छूटि लगे अधरान में लोइन लाल रँगे जनो जावक ॥ कामिनि केलि के मन्दिर में कवि देव करे

रति मान तरावक । सङ्गही बोलि उठे त-
जिका वक लाव कपोत कपोत्त के सावक ॥

अथ मध्या सुरतान्त यथा सवैया ।

रँग रावटी तै उतरी परभातही भावती
प्यारे के प्रेम पगी । अलसाति जम्हाति सु-
देव सुहाति रदच्छद में रद पाँति लगी ॥
सब सौतिन की छातियां छिनही में सुहागिन
की दुति देखि दगी । उतराती सी बैन त-
राती भई इतराती बधू इत राती जगी ॥४१॥

इति मध्या ।

अथ प्रोढ़ा दोहा ।

मति गतिरतिपतिसोंरचैरतिपतिसकलकलान।
कोविद अति मोहति महा प्रोढ़ा ताहि बखान॥
लब्धापति रतिकोविदाक्रान्त नाइका सोइ ।
सविभ्रमा यह भांति करि प्रौढ़ा चौविधि होइ ॥

अथ लब्धापति सवैया ।

स्याम के सङ्ग सदा हम डोलें जहां पिक

बोलैं अलीगन गुंजै । छांहन मांह उछाहनि सों छहरैं जहां बीरी पराग की पुंजै ॥ कोलिन मैं रस केलिन कै कवि देव करी चित की गति लुंजै । कालिंदी कूल महा अनुकूल तें फूलति मंजुल मंजुल कुंजै ॥ ४३ ॥

अथ रतिकोविदा सवैया ।

केलि मैं केतिक कौतिक कै रस हांस हुलास बिलासनि सोहै । कोमल नाद कथा रसबादुनि काम कला करिकै मन मोहै ॥ छेदि कटाक्ष की कोरनि सों गुन सों पति को मन मानिक पोहै । जानति तूँ रति की सिगरी गति तोसी वधू रति कोविद को है ॥४४॥

आक्रान्तनायका सवैया ।

हार बिहार में छूटि परे अरु भूषन छूटि परे हैं समूलनि । जो रि सबै पहिरायौ सम्हारि के अङ्ग सम्हारि सुधारि दुकूलनि ॥ सीतल सेज बिछाइ कै बालम बाल मृना-

लनि के दल मूलनि । वैसीय बेनी बनाइ
लला, गहि गूँथौ गुपाल गुलाब के फूलनि ॥

अथ सविभ्रमा कवित्त ।

हँसत हँसत आई भावते के मन भाई
देव कवि छवि छाई बर सोने से सरीर सों।
तैसी चन्द्रमुखी के वा चन्द्रमुख चन्द्रमा
सोहैहौ परै चाँदिनी औ चाँदनी से चीर सों ॥
सोंधे की सुबासु अङ्ग वासु वो उसास बासु
आसपास वासी रही सुखद समीर सों ॥
कुंजत जी गुंजति गँभीर गीर तीर तीर रहो
रङ्गभवन भरी भौंरन की भीर सों ॥४६॥

अथ प्रौढ़ासुरत सवैया ।

साजि सिंगारनि सेज चढ़ी तबही तें सखी
सब सुद्धि भुलानी । कंचुकी के बँद छूटत
जानें न नीवी की डोरि न टूटति जानी ॥
ऐसी विमोहित ह्वै गई है जनु जानति रा-
तिक भै रति मानी । साजी कवै रसना रस
केलि में बाजी कवै बिछुवान की बानी ॥४७॥

अथ प्रौढ़ा सुरतान्त कवित्त ।

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि जोरावर जंघन सघन लरै लचि के । बार २ देति बकसीस जैतिवारनि कों बारनि कों बाँधै जौ पिछार से सुबचि के ॥ ऊरुन दुकूल दै उरोजनि को फूल मनि ओठनि उठाये पान खाइ खाइ पचिके । देव कहै आजु मानों जीतो है अनङ्गरिपु पी के संग संग रस सुरतरङ्ग रचि के ॥ ४८ ॥

इति प्रौढ़ा ।

अथ मध्या प्रौढ़ा मान दोहा ।

मध्या औ प्रोढ़ा दुओ होंहि बिबिध करिमानु।
धीरा अरु मध्यम कह्यो औरु अधीरा जानु ॥
वक्रयुक्ति पति सों कहै मध्या धीरा नारि ।
मध्या देह उराहनो वचन अधीरा गारि ॥

मध्या धीरा यथा कवित्त ।

भारे हो भूरि भराई भरे अरु भांति स-

भांतिनु के मन भाये । भाग बड़े वही भामती के जिहि भामते लै रँग भौन बसाये ॥ भेषु भलोई भली विधि सों करि भूलि परे किधों काहू भुलाये । लाल भले हो भलो सुख दीनों भली भई आजु भले बनि आये ॥

अथ मध्या मध्यमा कवित्त ।

आजु कछू अँसुवानि भरे दृग देखिय सो न कहौ जिय जो है । चूक परी हमही ते कछू किधों जापर कोप कियो वह को है ॥ चूक अचूक हमारी यहै कहो को नहिं जोबन को मद मोहै । स्याम सु जान सुजाने बलाई ल्यों जोई करौ सु तुम्हें सब सोहै ॥

अथ मध्या अधीरा यथा सवैया ।

भोरही भौन मे भावतो आवत प्यारी चितै के इतै दृग फेरे । बाल बिलोकि कै लाल कह्यो कहु काहे ते लाल बिलोचन तेरे ॥ बोलि उठी सुनि कै तिय बोल सुदेव

कहै अति कोप करेरे। काहू के रङ्ग रँगे दृग रावरे रावरे रङ्ग रँगे दृग मेरे ॥ ५३ ॥

इति मध्या मान।

अथ प्रौढ़ा मान दोहा।

उदासीन अति कोप रति पति सों प्रौढ़ा धीर।
तर्जै मध्य उदास ह्वै ताहि न करै अधीर ॥

प्रौढ़ा धीरा सवैया।

क्रोध कियो मन भावन सों सु छिपाइ लियो इक बेनी के बोलनि । राख्यो हिये अति ईर्षा बाँधि खुल्यो उन घूँघट की पट खोलनि ॥ ज्यों चितई इत आली की ओर सु गांठि छुटी भरि भौंह बिलोलनि । लोइन कोइन ह्वै उझक्यो सुबताय दियो कवि कोप कपोलनि ॥ ५५ ॥

अथ प्रौढ़ा मध्यमा सवैया।

सूधिये बात सुनों समुझो अरु सूधी कहौं करि सूधो सबै सँग । ऐसी न काहू के वा-

तुरता चित जो चितवै कवि देव दवै अँग॥ वाही के जैये बलाइ ल्यों बालम हौं तुम्हे नीको बतावाति हो ढँग । प्यारो लगे यह जाको सनेह महा उर बीच महाउर को रँग॥

प्रोढ़ा अधीरा सवैया ।

पीकभरी पलकैं झलकैं अलकैं जु गड़ी सु लसैं भुज खोज की। छाइ रही छबि छैल की छाती में छाप बनी कहूँ ओछे उरोजकी॥ ताही चितौत बड़ी अँखियानि तें ती की चितौनि चली अति ओजकी । बालम ओर बिलोकि कैं बाल दई मनो खैंचि सनाल सरोजकी ॥ ५७ ॥

इति प्रौढ़ा मान ।

दोहा ।

मध्या प्रौढ़ा दोय विधि जेष्टा और कनिष्ट।
अधिक नूनपियप्यारकरिबरनतग्यानगरिष्ट॥

सवैया ।

खेलत फाग खिलार खरे अनुराग भरे

बड़ भाग कन्हाई । एकही भौन में दोउन देखि के देव करी इक चातुरताई ॥ लाल गुलाल सों लीनी मुठी भरि बालके भालकी ओर चलाई । वा दृग मूँदि उतै चितयो इन भेंटी इतै बृषभान की जाई ॥ ५६ ॥

इति स्वकीयाभेदलक्षणउदाहरणानि समाप्तानि ।

अथ परकीया निरूप्यते दोहा ।

जाकीगतिउपपतिसदापतिसौंरतिगतिनाहिं ।
सोपरकीयाजानिये ढकीप्रीतिजगमांहिं॥६०॥
ताहि परोढ़ा कन्यका द्वै विधि कहत प्रवीन ।
गुपित चेष्टा परोढ़ा कन्या पितु आधीन ॥६१॥

प्रौढ़ा सवैया ।

मोहन मोहि न जान्यो यहां बखि बाल कों बोल सुनायो नजीक तें । चौंकि परी चहुं- ओर चितै गुरुलोगनि देखि उठी नहीं ठीक तें ॥ देखियो बात चलै न कहूँ यह छूटि

हैमी कुललोक की लीक तें। घूमति है घरही में घनी यह घायल लौं घरघाल घरीक तें॥

दोहा।

तामैं गुप्ता विदग्धा लक्षितारु कुलटानु ।
अन्तर भूत बखानियें अनुसयना मुदितानु॥

गुप्ता यथा सवैया।

झँझरी के झरोखनि ह्वैके झकोरति रावटीहू मैं न जाति सही। कविदेव तहां कहौ कौसिक सोइये जी की विथा सु परै न कही॥ अधरानु को कोरति अंग मरोरति हारनि तोरति जोर यही। घर बाहिर जाहिर भीतरहूँ बन बागनि बीर बयारि बही॥ ६४॥

दोहा।

कहत विदग्धा भाँति द्वै सकल सुमति बर लोइ।
वाकविदग्धा बहुरि अरु क्रियाविदग्धा होइ॥

सवैया।

ब्याह की वीथि बुलाये गये सब लोगनु लागि गये दिन दूने। बेव तुम्हारी लौं बैठी

अकेलिये हौं अपने उर आनति ऊने ॥ क्यौं तिन्हें बासर बीतत बीर बनाये हैं जे बिधि बन्धुबिहूने । कौन घरी घर के घर आवें लगे घरघोर घरीक के सूने ॥ ६६ ॥

अथ क्रियाविदग्धा सवैया ।

बसुरी सुनि देखन दौरि चली जमुनाजल के मिस बेग तवै । कविदेव सखी के सकोचन सों करि ऊठ मु औसर कों बितवै ॥ वृषभानकुमारि मुरारि की ओर बिलोचन कोरनि सों चितवै । चलिबे कों घरें न करै मन नेक घड़े फिरि फेरि भरै रितवै ॥

लक्षिता सवैया ।

जौ लगि जीवन है जग मैं नाहि तौ लगि जीव सुभाव टरै गौ । देव यही जिय जानिये जू जन जो करि आयो है सोई करैगो ॥ कोटि करौ कोई प्रान हरे बिन हारिल की

लकड़ी न हरैगो। भूलेंहूं भौंर चलावै न चित्त जो चम्पक चौगुने फूल फरैगो ॥ ६८ ॥

कुलटा सवैया।

छोरि दुकूल सकोरि कें अंग मरोरि के बारनि हारनि छूटे। मीड़ि नितंबहि पीड़ि पयोधर दाबत दन्त रदच्छद फूटे॥ ज्यों करी करि केलि करै निकरै न कहूं कुल सों किनि टूटै। तौ लगि जाने कहा जुवती सुख जो न जुवा दिन जामिन जूटै ॥ ६९ ॥

दोहा।

थानि हानितिहिहानिभयतहँप्रियगमअनुमान।
अनुसपनाइाहिविधित्रिविधिवरनतसकलसुजान

सवैया।

सब ऊजर भवन बसे तब तें तरुनी तन ताप रही भरि कें। सुनि चेत अचेतसी ह्वै चित सोचति जैहै निकुंज घने भरि कें ॥ ततकालहि देव गुपाल गये बनतें बनमाल

नई धरिके । जदुनाथहिं जोवत ज्वाल भई जुवती बिरहज्वर सों अरि कें ॥ ७१ ॥

मुदिता सवैया

सांझ की कारी घटा घिरि आई महा झरसों बरसे भरि सावन । धौरिहूं कोरिये आइ गई सु रम्हाइकें धाइकें लागी चुखावन ॥ माइ कह्यो कोई जाइ कहै किनि मोहू सों आजु कह्यो उन आवन। यों सुनि आनन्द तें उठि धाई अकेलिये बाल गुपाल बुलावन ॥ ७२ ॥

इति प्रौढादि परकीया भेद ।

अथ कन्यका सवैया ।

झूमि अटा उझकै कहूं देव सु दूरितें दौरि झरोखनि झूली । हांस हुलास बिलास भरी मृग खञ्जनि मीन प्रकासनि तूली ॥ चारिहू ओर चलै चपलें जु मनोज की तेगें

सरोज सी फूली । राधिका की अखियां ल-
खिकें सखियां सब सङ्ग की कौतिक भूली ॥

दोहा ।

चित्र स्वप्न परतच्छकरि दरसन त्रबिधि बखानु।
देसकाल भङ्गीनु करिश्रवन तीनि बिधि जानु ॥

दरसन यथा सवैया ।

चारु चरित्र विचित्र बनाइकें चित्रमें जे
निरखे अबरेखे । चोरि लियो जिन चित्त
चितौतही त्योंहीं बने सपने महिं देखे ॥
आजुतें नन्दके मन्दिरतें निकसे घन सुन्दर
रूप बिसेखे । होंहू अटारी भटू चढ़ी भा-
गतें मैं हरिजू भरिजू दृग देखे ॥ ७५ ॥

श्रवन यथा सवैया ।

ऊंचे अटा सजि सेज सजी तो कहा हरि
जोन जहां निस जागे । फूलि रहे बनकुञ्ज
कहा तौ बसन्त मैं जौ न लला अनुरागे ॥
देव सबै गहिनें पहिरे चुनि चाइ सों चारु

बनाये हैं बागे । सुन्दरि सुन्दर लागिहै तौ कहिहैं जब सुन्दरस्याम सभागे ॥ ७६ ॥

इति परकीया समाप्ता ।

अथ वेस्या दोहा ।

रीझ नही गुन रूप की सामान्या के जीय ।
जौही लों धन देइ जो तौलों ताकी तीय ॥

कवित्त ।

सोहति किनारी लाल बादला की सारी गोरे अङ्गनि उज्यारी कसी कंचुकी बनाइकें । जेवर जड़ाऊ जगमगत जवाहिर के जूती जोती जावक की जीती पग पाइके ॥ भौंहनि भ्रमाइ भूरि भाइ करि नैनन सों सैननि सौं बैननि कहति मुसक्याइ कें । चीकनी चितौनि चारु चेरे करि चतुरनि बितु लियो चांहै चितु लियो है चुराइ कें ॥ ७८ ॥

इति सामान्यावनिता दोहा ।

पररतिदुःखित प्रेम अरु रूप गर्विता जानु ।
मानमती अरु चारि विधि स्वियादिकनु बखानु ॥

परस्तिदुखिता सवैया।

साँझही स्याम कों लेन गई सुबसी बन में सब जामिनि जाइ कैं। सीरी बयारि छिदें अधरा उरझे उरझाखर झार मझाइ कैं॥ तेरी सौं को करिहै करतूति हती करिबे सो करी तैं बनाइ के। भोरहीं आई भटू इत मो दुखदाइनि काज इतो दुख पाइ के॥

प्रेम गर्व्विता सवैया।

ये बिनु गारी दये गुरुलोगन टेरेईं सैन न नैनन टेरेईं। देव कहै दुरि द्वार लों जात कितो करि हारी तऊ हरि हेरेईं॥ पाय यही घर बैठि रहौं जु तौ वे मिलि खेलन आवत मेरेई। घेरु करें घर बाहिर के अरु ये सु फिरैं घर बाहिर घेरेईं॥ ८१॥

रूप गर्व्विता सवैया।

हरिजू सों हहा हटको री भटू जनि बात कहें जिय सोचनि की। काहि पंकजनैनी

बुलाइ के मोहि दई सुखमा सुख मोचन की ॥ उनहीं सों उराहनो देउ त तौ उमगै उर रासि सकोचनि की । बलिवारों री बीर जु बारिज को जु बराबरि बीर बिलोचनि की ॥

दोहा ।

हैं बियोग सिंगार में बरन्यो मान प्रकार ।
ताही के मतमानिनी कविवर करत बिचार ॥

अथ अवस्थाभेद दोहा ।

स्वाधीना उतकण्ठिता बासकसज्जा बाम ।
कलहन्तरिता खण्डिता विप्रलब्धका नाम ॥
तातें प्रोषितप्रेयसी अभिसारिका बखान ।
आठ अवस्थाभेद ये एक एक प्रति जान ॥

अथ स्वाधीनालक्षण दोहा

बँध्यो रहै गुन रूप सों जाको पति आधीन ।
स्वाधीना सो नाइका बरनत परम प्रवीन ॥

सवैया ।

मालिनि ह्वै हरि माल गुहैं चितव मुख चेरी भये चित चाइन । पान खवावै खवा-

सिन ह्वै कें सवासिन ह्वै सिखवैं सब भाइनि ॥ बेंदी दै देव दिखाइ कें दर्पन जावक देत भये अब नाइनि । प्रेमपगे पिय पीतपटी पर प्यारी के पोंछिय मारी से पाइनि ॥८६॥

उतकण्ठिता सवैया ।

पिय जा हितप्यारिह के पदपकञ्ज पूजिबे कों पकरौ पन सो । सुविसारि दियो तिहि मेहीं निरादरे घोर पतिग्रह कौ धन सो ॥ इन पायनही विष बीरी भई अरु सीरी बयारि बरै तन सो । कहु क्यों न अंगारु सो हारु लगै हिय मै घनसार घन्यो घन सो ॥

दोहा ।

पति कों गृह आए बिना सोच बढ़े जिय जाहि ।
हेतु विचारै चित्त में उतकण्ठा कहु ताहि ॥

सवैया ।

मारग हेरति हौं कब की कहौ काहे तें आये नहीं अबहूं हरि । आवत हैं किधौं

ऐहैं अबै कविदेव के राखे हैं कोहू कछू करि ॥ मोह तें न्यारी कै प्यारी गुपाल के हाथ बि-चारिये री चित मैं धरि। जो रमनी रमनीय लगै बसि वाके रहै सजनी रजनी भरि ॥८६॥

अथ बासकसज्जा दोहा।

जाने पिय को आइबो निहचै चारु बिचारि।
मग देखै भूषन सजे बासकसज्जा नारि ॥

सवैया।

घोरि घनी घनसारु सों केसरि चंदन गारि कें अंग सम्हारै। मोतिन माँग के बार गुहे अरु हार गुहे बलि बागे संवारै ॥ देव कहैं सब भेष बनाइ कें आइ कें फूलनि सेज सुधारै। बैठी कहा उठि देखौ भटू हरि आवत हैं घर आजु हमारै ॥ ६१ ॥

कलहन्तरिता दोहा।

पहिले पति अपमान करि फिरि पीछे पछिताइ ॥
कलहन्तरिता नाइका ताहि कहैं कबिराइ ॥

अथ खण्डिता दोहा।

जाके भवन न जाइ पति रहै कहूं रति मानि।
खण्डितवारि सुखण्डिताकबिवरकहतबखानि॥

सवैया।

सेज सुधारि सँवारि सबै अँग आंगन के मग मैं पग रोपै। चन्द की ओर चितौति गई निशि नाहकी चाह चढ़ी चित चोंपै॥ प्रातही प्रीतम आये कहूं बासि देव कहीं न परै छबि मोपै। प्यारी के पीक भरे अधरा ते उठी मनों कम्पत कोप की कोपैं॥

अथ विप्रलब्धा दोहा।

जाकों पति की दूतिका लै पहुचै रतिधाम।
तहँपतिमिलैनजाहि सों विप्रलब्धिकावाम॥

सवैया।

दूती लिवाइ चली तहँ बालकों जा बन बालम सों मिलि खेल्यो। भेषु बनाइकें भूषन साजि सुगन्धित भोर कों साजु सकेल्यो॥

आन दही तें यहां तें गई तिय देखि उहां रति कुंज अकेल्यो । बीरी बिगारि सखीन सों रारि के हार उतारि उतै गहि मेल्यो ॥९६॥

अथ प्रोषितप्रेयसी ।

सो तिय प्रोषितप्रेयसी जाकौ पति परदेस ।
काहू कारन तें गयो दै कें अवधि प्रवेस ॥

सवैया ।

होरी हरें हरें आइ गई हरि आए न हेरि हिये हहरैगी । बानि बनी बनबागनि की कविदेव बिलोकि बियोग बरैगी ॥ नाउँ न लेउ बसन्त कौ री सुनि हाय कहूं पछिताय मरैगी । कैसे कि जीहै किसोरी जो केसरि नीर सों बीर अबीर भरैगी ॥ ९८ ॥

अथ अभिसारिका दोहा ।

जो घेरी मद मदन करि आपहि पति पर जाइ ।
वेष अङ्ग अभिसारिका सजे समान वनाइ ॥

कबित्त ।

घटा घहराति बिज्जुछटा छहराति आधी-

राति हहराति कोटि कीट रवि रुञ्ज लों । हू-
कत उलूक बन कूकत फिरत फेरु भूकत जु
भैरों भूत गावें अलिगुंज लों ॥ झिल्ली मुख
मून्दि तहां बीछीगन गून्दि विष व्यालनि
कों रूदि के मृनालनि के पुञ्ज लों । जाई
वृषभान की कन्हाई के सनेहबस आई उठि
ऐसे में अकेली केलिकुञ्ज लों ॥ १०० ॥

इति अवस्थष्टकं दोहा ।

स्वीया तेरह भेद करि द्वै जु भेद परनारि ।
एक जु बेस्या ये सबै सोरह कहों विचारि॥
एक एक प्रति सोरहीं आठ अवस्था जानु ।
जोरि सबै ये एक सौ अट्ठाईस बखानु ॥
उत्तम मध्यम अधम करि ये सब त्रिबिधि बिचार।
चौरासी अरु तीनि सै जोरें सब बिस्तार ॥

अथ उत्तमा दोहा ।

सापराध पति देखि कैं करै जु मन मैं मानु ।
दोष जनावै सहजहीं सो उत्तमा बखानु ॥४॥

सवैया।

केसरि सों उबटो सब अंग बड़े मुक्तानि सों मांग सम्हारी। चारु सुचम्पकहार हिये उर ओछे उरोजन की छवि न्यारी ॥ हाथ सों हाथ गहें कवि देव सुसाथ तिहारेई नाथ निहारी। हाहा हमारी सौं सांची कहौं वह थी छोहरी छीवरबारी ॥ १०५ ॥

अथ मध्यमा दोहा ।

जाहि जानि जिय मानिनी कन्त करै मनुहारि।
पाइ परैं कोपहि तजै कहौ मध्यमा नारि ॥

सवैया ।

नेह सों नीचे निहारि निहोरत नाहीं कै नाह की ओर चितैबो। पीठि दै मोरि मरोरि कैं डीठि सकोरि कैं सौंह सौं भौंह चढ़ैबो॥ प्रीतम सों कविदेव रिसाइ के पाइ लगाइ हिये सों लगैबो। तेरो री मोहि महासुख देत सुधारसहू तें रसीलो रिसैबो ॥ १०७ ॥

अथ अधमा दोहा ।

बिनु दोषहि रूठै तजै बिना मनाये मानु ।
जाको रिस रस हेतु बिन अधमा ताहि बखानु ॥

सवैया ।

आजु रिसोंहीं न सोंहीं चितौति कितौ न सखी प्रति प्रीति बढ़ावै । पीठि दै बैठी अमैठी सी ठीठि कै कोइन कोप की ओप कढ़ावै ॥ नाह सो नेह कौ तातौ न नैक ज ऊपर पाइ प्रतीति बढ़ावै । तीर से तानि तिरीछे कटाच्छ कमान सी भामिन भौंहे चढ़ावै ॥१०६॥

अथ सखी दोहा ।

बहु विनोद भूषन रचै करै जु चित्त प्रसन्न ।
प्रियहिं मिलावै उपदिसै रहै सदा आसन्न ॥
पति कों देइ उराहनो करै बिरह अस्वास ।
ऐसी सखी बखानिये जाके जी बिस्वास ॥१११॥

सवैया ।

बालबधू के बिनोद बढ़ाइ भली बिधि भूषन भेष बनावै । चाइ सों चित्त प्रसन्न

करै रसरंग मैं संग सयानि सिखावै ॥ देवै उराहनो दोउन को मन राखि कैं देव दुहून मिलावै। नाह सों नेह ततौ निबहै जब भाग तें ऐसी सखी करि पावै ॥ ११२ ॥

अथ दूती दोहा।

धाइ सखी दासी नटी ग्वालि सिल्पनी नारि।
मालिनि नाइन बालिका बिधवा बिधू बिचारि॥
सन्यासिन भिक्षुक वधू सम्बन्धी की वाम।
एती होती दूतिका दूतप्पन अभिराम ॥१४॥

कवित्त।

देव जू की दूती वृषभानजू के भौंन जाइ
राधिका बुलाइ बहु बातानि खिलाइ कें।
हास रस सानी दुरि आङ्गन ते द्वार आनी
हित की कहानी कहि हिय सों हिलाइ कें॥
हरें हँसि कह्यो कैसें सहौधों पर तुम्हें है
जैहै नदनन्दु तो बियोग सी बिलाइ कें।

बिरह बढ़ाइ प्रेम पद्धति पढ़ाइ चित चोंपहि बढ़ाइ दीनी मोहने मिलाइ कें ॥

इति श्री कवि देवदत्त बिरचिते भावबिलासे नाइका नाइका बरननो नाम चतुर्थो बिलास:॥ ४ ॥

अथ अलङ्कार बरननं कवित्त ।

प्रथम स्वभावउक्ति उपमोपमेय संस अनन्वय अरु रूपक बखानियें। अतिसय समास बक्र युक्ति पर जानउक्ति सहित सहोक्ति सविशेष उक्ति जानियें ॥ तातें व्यतिरेक हैं विभाव ऊतप्रेच्छा क्षेप दीपक उदात हैं अपउक्ति आनियें। अरु असलेखा न्यास अर्थान्तर व्याजस्तुति अप्रस्तुत अस्तुति सु अलङ्कार मानियें॥ आवृत निर्दसन बिरोध परिवृत्त हेतु रसवत उरज ससूछम बताइये। प्रियक्रम समाहित तुल्ययोग्यता औ लेस सवै भाविक औ सकीरनि आसिख सुनाइये॥ अलङ्कार मुख्य उनतालीस है देव कहैं येई पुराननि मुनि मतनि

में पाइये। आधुनि कविन के संमत अनेक और
इनही के भेद और बिबिधि बताइये ॥२॥

अथ स्वभावोक्ति दोहा।

जहां स्वभाव बखानिये स्वभावोक्ति सो नाम।
सुकवि जाति बर्णनकरत कहत सुनतअभिराम॥

कवित्त।

आगे आगे आस पास फैलति बिमल बास
पीछे पीछे भारी भरि भौंरनि के गान की।
तातें अति नीकी किंकिनी की झनकार होति
मोहनी है मानों मदमोहन के कान की॥
जगर मगर होति जोति नवजोबन की देखें
गति भलें मति देव देवतान की। सामुहैं
गली के जु अली के संग भली भांति चली
जाति देखी वह लली वृषभान की ॥४॥

अथ उपमा दोहा।

नून गुनहिं जहँ अधिक गुन कहिये बरनि समान।
अलङ्कार उपमा कहत ताही सुमति सुजान॥

सवैया ।

रात्ति जगी अँगिराति इतै गहि गैल मई गुन की निधि गोरी । रोमबली त्रिबली पै लसी कुसमी अंगियाहू लसी उर ओरी ॥ ओछे उरोजनि पै हँसि कें कसि के पहिरी गहरी रंग बोरी । पैरि सिवार सरोज सनाल चढ़ी मनों इन्द्रवधूनि की जोरी ॥ ६ ॥

अथ उपमेयोपमा दोहा ।

उपमा अरु उपमेय कौ जहँ क्रम एकै होइ ।
सोई उपमेयोपमा बरनि कहैं सब कोइ ॥७॥

सवैया ।

तेरी सी बेनी है स्याम अमा अरु तेरीयो बेनी है स्याम अमा सी । पूरनमासी सी तूं उजरी अरु तोसी उजारी है पूरनमासी ॥ तेरौ सो आनन चंद लसै तुअ आनन मैं सखी चंदसमा सी । तोसी बधू रमणीय रमा कविदेव है तूं रमणीय रमा सी ॥८॥

अथ संशय दोहा ।

जहां उपमा उपमेय को आपुस में संदेहु ।
ताही सों संसै उकति सुमति जानि सब लेहु ॥

सवैया ।

श्री वृषभानकुमारी के रूप की न्यारी कै को उपमा उपजावै। चंचल नैन के मैन के बान कि खञ्जन मीनन कोई बतावै ॥ आनद सों बिहसाति जबै कबिदेव तबै बहुधां मनधावै। कै मुख कैधों कलाधर है इतनो निहच्योई नहीं चित आवै ॥ १० ॥

अथ अनन्वय दोहा ।

तैसो सोई बरनिये जहां न और समान ।
ताहि अनन्वय नाम कहि बरनत देव सुजान ॥

सवैया ।

केस से केस लसै मुख सो मुख नैन से नैन रहे रङ्ग सों छकि । देव कहै सब अङ्ग से अङ्ग सुरङ्ग दुकूलनि में झलकै झकि ॥

और नही उपमा उपजे जग ढूड़ों सबे सब भांतिन सों तकि ॥ राधिका श्रीवृषभानकुमारि री तोसी तुहीं अरु कौन सरै बकि ॥

अथ रूपक दोहा ।

सम समान जैसें जनों जिमि ज्यों मानो तूल ।
और सरस कबिदेव ए पद उपमा के मूल ॥
जह उपमा मैं ये न पद सोई रूपक जानु ।
सीमा तें अति बरनिये अतिसय ताहि बखानु ॥

कबित्त ।

मन्दहास चन्द्रका कौ मन्दिर बदन चन्द सुन्दर मधुरबानि सुधा सरसाति है । इन्दिर के ऐंन नैन इन्दीबर फूलिरहे बिद्रुम अधर देत मोतिन की पांति है ॥ ऐसो अदभुत रूप राधिका कौ देव देखौ जाके बिनु देखें छिन छाती न सिराति है । रसिक कन्हाई बलि पूछन हों आई तुम्हें ऐसी प्यारी पाइ कैसें न्यारी रखि जाति है ॥ १५ ॥

दोहा।

कछू बस्तु चाहै कहौ ता सम बरनै और।
सुसमोसाक्ति सो जानिये अलङ्कार सिरमौर॥

सवैया।

मालती सों मिलिये निस द्योसहू यों सुखदानि ह्वै ज्यों समुझैये। प्रीति पुरानी पुरैंनि के रैनि रहौ नियरे न बिपत्ति बहैये॥ ऊपरही गुनरूप अनूप निरन्तर अन्तर में पतियैये। ये आलि दूलह भूलेंहू देव जू चम्पक फूल के मूल न जैये॥ १७॥

बक्रोक्ति दोहा।

काकु वचन अश्लेष करि और अरथ ह्वै जाइ।
सो बक्रोक्ति सु बरनियें उत्तम काव्य सुभाइ॥

सवैया।

मति कोप करे पति सों कबहूं मति कोप करे पतिसों निबहें। कवि देव न मानवधूरत हैं सब भाखत आन बधूरत है॥ अ-

बलों न कहूं अवलोकि तुम्हैं अब लोक तुम्है सुख देत रहैं। किनि नाम कहौ हमसों तिन कौ हम सोतिन कौ किहि भांति कहैं॥१६॥

दोहा।

मन की कहैं न ताल ये बरने और प्रकार।
परजायोक्ति सुनाम जो अलङ्कार निरधार॥

सवैया।

मैं सुनी कालि परों लगि सासुरे जैहो सु सांची कहौ किनि सोऊ। देव कहै केहि भांति मिलै अब को जाने काहि कहा कब कोऊ॥ भेंटि तौ लेहु भटू उठि स्याम कों आजुही की निस आये हैं ओऊ। हौं अपने दृग मूंदति हों धरि धाइ के आज मिलो तुम दोऊ॥ २१॥

दोहा।

सो सहोक्ति जहँ सहित गुन कीजे सहज बखान।
अलङ्कार कविदेव कहि सो सहोक्ति उर आनि॥

सवैया ।

प्यारी के प्रान समेत पियो परदेस पयान की बात चलावै । देवजू छोभ समेत छपा छतियां मैं छपाकर की छबि छावै ॥ बोलि अली बन बीच बसन्त कौ मीचु समेत न-गीच बतावै । काम के तीर समेत समीर सरीर मैं लागत पीर बढ़ावै ॥ २३ ॥

दोहा ।

जाति कर्म गुन भेद की बिकलपता करि जाहि ।
वस्तुहि बरनि दिखाइये विशेषोक्ति कहु ताहि ॥

सवैया ।

जोबन व्याधु नहीं अरु बैननि मोहनी मन्त्र नहीं अवरोह्यो । भौंह कमान न बान बिलोचन तानि तऊ पति कौ चितु पोह्यो ॥ देव घृताची सची न रची तूं दियो नहीं देवता को तन तो ह्यो । तापर बीर अहीर की जाई री तैं मनमोहन कौ मन मोह्यो ॥

दोहा ।

जहँ समान विवि बस्तुकी कीजे भेद बखानु ।
अलङ्कार व्यतिरेक सो देव सुमति पहिचानु ॥

सवैया ।

कौन कें होइ नही मैं हुलासु सु जात सबै दुख देखतहीं दवि । जाहि लखैं बिलखैं यह भांति परैं मनु सौति सरोजन पै पवि ॥ याही तें प्यारी निहारी मुखद्युति चन्द्रसमान बखानत हैं कवि । आनन ओप मलीन न होति पै छीनि कै जाति छपाकर की छबि ॥ २७ ॥

दोहा ।

हेतु प्रसिद्धि निरास करि कहिये हेतु सुभाउ ।
अलङ्कार कबिदेव कहि सो बिभावना गाउ ॥

सवैया ।

ये अँखियां बिनु काजर कारी अयाँरी चितै चित मैं चपटीसी । मीठी लगैं बतियां मुख सीठी यों सौतिन के उरमैं दपटीसी ॥ अङ्गहू

राग बिना अँग अङ्ग झकोरें सुगन्धन की झपटी सी। प्यारी तिहारी ये एड़ी लसैं बिन जावक पावक की लपटी सी ॥ २६ ॥

अथ उत्प्रेक्षा दोहा।

और वस्तु कौ तर्क करि बरनें निहचै और।
सो कहिये उतप्रेक्षा अनुमानादिक दौर ॥

कवित्त।

हियौ हरें लेती पशु पक्षी बस करें लेती छिनों बिछुरेंही छिदि छिदि उठें छतियां। सुनि सुनि मोही हिय जानति हौं कोही अब ओही रूप रहे अबरोही दिन रतियां॥ रह्यो न परत मौन मान कों करेरी कौन भूल्यो भौन गौन गई लोक लाज घतियां। मेरे मान आवति मुनिन मन मोहिबे कों मोहनी के मंत्र हैं री मोहनी की बतियां॥

दोहा।

करत कहत कछु फेर सौ बर्जन बच आक्षेप।
उदात्त मैं अति बरनियें सम्पति द्युति अवलेप॥

कवित्त ।

नूतन गुलाल नूत मञ्जरी की मालनि
सों कीजे गजमुख सन मुख सनमान कौ।
करिहैं सकल सुख बिमुख बियोग दुख
जानियो न न्यारे ये हमारे पिय प्रानकौ ॥
बायें बोलैं मोर पिक सोर करें सामुहें हूं
दाहिने सुनो जू मत्त मधुकर गान कों ।
सगुन भले हैं चलिवे को जो पै चलौ चितु
आवतु बसन्त कन्त करिये पयान कों ॥

अथ उदात्त सवैया ।

बाल कों न्योति बुलाइवे कों बरसाने
लों हों पठई नन्दरानी।श्रीवृषभान की सं-
पति देखि थकी अतिही गति औ मति बानी॥
भूलि परी मनिमन्दिर मैं प्रतिबिंबन देखि
बिशेष भुलानी । चारि घरी लों चितौत चि-
तौत मरू करि चन्दमुखी पहिचानी ॥३४॥

दोहा ।

अरथ कहैं एकै क्रिया जहां आदि मधि अन्त ।
अथवा जहँ प्रति पद क्रिया दीपक कहत सुसंत ॥

सवैया ।

मोहि लई हरिनी लखि कै हरि नीरज सी बड़री अँखियान सों । सारिका सारसिका रसिका सुकपोत कपोती पिकी मृदुबानि सों ॥ देव कहै सब भूपसुता अनुरूप अनूपम रूप कलानि सों । गोपवधू विधु से मुख की घन सुन्दर हेरि हरी मुसक्यानि सों ॥३६॥

अपन्हुति दोहा ।

मनको अरथ छिपाइये औरे अर्थ प्रकास ।
श्लेष बचन काकु स्वरनि कहत अपन्हुति तास ॥

सवैया ।

हौहीं हौं और कि ये सब और कि डोलत आजु कौ औरे समीरौ । यातें इन्हें तन ताप सिरातु पै मेरे हिये न थिरातु है धीरौ ॥ ये

कहैं कोकिल कूक भली मुहि कान सुने जम आवतु नीरो । लोग ससी को सराहत री सब तोहूँ लगै सखी सांचेहूं सीरो ॥३८॥

दोहा ।

जहां काव्य के पदनि में उपजै अरथ अनंत ।
अलंकार अश्लेष सो बरनत कवि मतिमंत ॥

सवैया ।

ऐसो गुनी गरे लागतही न रहै तन मैं सनताप री एको । देय महारस बास निवास बड़ो सुख जा उर बास किये को ॥ रूप निधान अनूप विधान सुप्राननि कौ फल जासों जिये कौ । सांचेहूं है सखी नन्दकुमार कुमार नहीं यह हार हिये कौ ॥

दोहा ।

युक्त अरथ दृढ़ करन कों वाक्य जु कहिये और ।
सो अर्थान्तर न्यास कहि बरनत रस बस भोर ॥

सवैया ।

चैन के ऐन ये नैन निहारत मैन के कोउ

कर मैं न परै री। तापर नैसिक अञ्जन देत निरञ्जनहू के हिये कों हरै री॥ साधुओ होइ असाधु कहूं कबि देव जो कारे के संग परै री। स्याही रह्यो अरु स्याह सुतौ सखी आठहू जाम कुकाम करै री॥ ४२॥

दोहा।

जहां सु अप्रस्तुति अस्तुती निंदा की अचान।
निंदै अरु जहां सराहिये सो व्याजस्तुति जान॥

अप्रस्तुति सवैया।

बड़भागिन येई बिरंचि रची न इतौ सुख आन कहूं तिय के। बिछुरै न छिनौ भरि बालम तें कविदेव जू संग रहैं जिय के॥ तृन चारु चरै रुचि सों चहुँओर चलै चितवै सुचि सों हिय के। सब तें सब भांति भली हरिनी निसिवासर पास रहैं पिय के॥

व्याजस्तुति यथा सवैया।

को हमकों तुमसे तपसी बिनु जोग सिखावन आइ है ऊधौ। पै यह पूछियै जू

उनकों सुधि पाछिली आवती है कबहूं धौ ॥ एक भली भई भूप भये अरु भूलि गये दधि माखन दूधौ । कूबरी सी अति सूधी बधू कों मिल्यो बर देव जू स्याम सौ सूधौ ॥

दोहा ।

आवृति दीपक भेद है ताहू त्रिविधि बखान ।
आवृति अर्थावृत्ति अरु पर पदार्थ वृतिजानु ॥

सवैया ।

बेली लसें विलसें नव पल्लव फूल खिलें न खिलें नव कोरे । मोरत मान कों गान अलीनि के कूकि पिकी मुनि को मन मोरे ॥ डोलत पौन सुगन्ध चले अरु मैन के बान सुगन्ध कों डोरे । चंचल नैननि सों तरुनी अरु नैन कटाछन सों चितु चोरे ॥ ४७ ॥

दोहा ।

औरे बस्तु बखानिये फल तब ताहि समान ।
जहां दिखाइय और महि ताहि निदर्शनजान ॥

सवैया ।

देखिबे कों जिनको दिन राति रहै उर में अति आतुर ह्वै हरि । कोटि उपाइन पाइये जे न रहे जिनके बिरहज्वर सों जरि ॥ पार न पैयतु आनद कौ तिन आनि भटू उठि भेटें भुजा भरि । जानी परै नाहिं देव दया बिष देत मिली विपया जु मया करि ॥४६॥

दोहा ।

जहां विरोधी पदारथ मिलै एकही ठोर ।
अलङ्कार सुविरोध विनु विप पियूप बिष कोर ॥

सवैया ।

आयो बसन्त लग्यो बरसाउन नैननि तें सरिता उमहे री । कौ लगि जीव छिपावै छपा मैं छपाकर की छबि छाइ रहै री ॥ चंदन सों छिरकें छतियां अति आगि उठै दुख कौन सहैरी । देव जू सीतल मन्द सुगन्ध सुगन्ध बहौ लगि देह दहै री ॥ ५० ॥

दोहा ।

जहां वस्तु बरननि पदनि फिरि आवतु है अर्थ।
ताही सों परिवृत्ति कहि बरनत सुमति समर्थ ॥

कवित्त ।

केवली समृढ़ लाज ढूढ़त ढिठाइ पैये चातुरी अगूढ़ गूढ़ मूढ़ता के खोज हैं ॥ सोभा सील भरत अरति निकरत सब मुहि चले खेल पुरि चलें चित्त चोज हैं ॥ हीन होति कटि तट पीन होत जघन सघन सोच लोचन ज्यों नाचत सरोज हैं। जाति लरिकाई तरुनाई तन आवत सु बैठत मनोज देव उठत उरोज हैं ॥ ५३ ॥

दोहा ।

हेतु सहित जँह अरथ पद हेतु वरनिये सोइ।
नौहू रस में सरसता जहां सुरसवत होइ ॥

सवैया ।

देव यहै दिन राति कहै हरि कैसेहूं राधे सों बात कहैबी। केलि के कुंज अकेली मिलै

कबहूं भरिकें भुज भेटिन पैबी ॥ आठहू सिद्धि नवो निधि की निधि है विरची विधि सान्निधि ऐबी। मेटि बियोग समेटि हियो भरि भेंटि कबै मुखचन्द अचैबी ॥ ५५ ॥

बेली नवेली लतानि सों केली के प्रात अन्हाइ सरोवर पावन । पिंजर मंजर का छहराइ रजक्षति छाइ छपाइ छपावन ॥ सीतल मन्द सुगन्ध महा बपुरे बिरही बपुरी नित पावन। आजु को आयो समीर सखीरी सरोज कँपाइ करेजा कँपावन ॥ ५५ ॥

दोहा।

अहङ्कार गर्ब्बित वचन सो ऊर्जस्वल होइ ।
संज्ञा सों प्रगटे अरथ सूछम कहिये सोइ ॥

ऊर्जस्वल सवैया।

देव दुरन्त दमी अचयो जिहि कालिय कों लै धन्यो सुब ह्वैहै। कौलों बको हों बकी बकवत्त अघारिक को अघु कैके अघैहै ॥

कान्ह के आगे न काहू को कोप कहूं कबहूं निबह्यो न निबैहै। छाड़ि दै मान री मान कह्यो कहुं भानु को तेज कृसानु पै रैहै ॥ ५८ ॥

अथ सूक्ष्म सवैया।

बैठी बहू गुरुलोगनि में लखि लाल गये करिकै कछु ओल्यो। ना चितई न भई तिय चंचल देव इते उनतें चितु डोल्यो ॥ चातुर आतुर जानि उन्हें छलही छल चाहि सखीन सों बोल्यो। त्योंही निसङ्क मयङ्कमुखी दृग मूंदि कै घूघट को पट खोल्यो ॥

दोहा।

कहिये जो अति प्रिय वचन प्रेमवखानौ ताहि।
उपमा अरु उपमेयको क्रम सुक्रमोक्ती आहि ॥

कवित्त।

केस भाल भृकुटी नयन श्रुति औ कपोल नासिका अधर दंत चिबुक विचारिये। कंठ कुच नाभी त्रौली रोमावलि और कटि, भुज कर जानु पग प्यारी के निहारिये ॥ कहूं

तमचन्द चांप खञ्जन कनक पुट पत्र सुक विंव मोती चंपकली वारिये। कंबु निंबु कूप नदी सैबाल मृनाल लता पल्लव कदलि कञ्ज चेरे करि डारिये ॥ ६१ ॥

दोहा।

जहँ कारज करतव्य कौ साधन विधि वल होइ।
अकसमातही देव कहि कहौ समाहित सोइ ॥

सवैया।

गुन गौरि कियो गुरु मान सु मैन लला के हिये लहराइ उठ्यो। मनुहारि के हारि सखी गुन औरंग भौनहि तें भहराइ उठ्यो॥ तब लों चहुंघाई घटा घहराइ कें विज्जु छटा छहराइ उठ्यो। कवि देवजू भाग तें भामती कौ भय तें हियरा हहराइ उठ्यो॥ ६३ ॥

दोहा।

जहँ समकरि गुन दोष के कीजे बस्तु बखान।
स्तुतिन पदारथ कौ तहां तुल्ययोगिता जान ॥

सवैया ।

एक तुहीं वृषभानसुता अरु तीनि हैं वे जु समेत सची हैं। औरन केतिक राजन के कविराजन की रसनायै नची हैं॥ देवी रमा कवि देव उमा ये त्रिलोक मैं रूप की रासि मची हैं। पै वर नारि महा सुकुमारि ये चारि विरञ्च विचारि रचीं हैं॥ ६५॥

दोहा ।

प्रगट अरथ जहँ लेसकरि कीजे ताहि निगूढ़।
लेस कहत तासों सु कबि जे बुधि बल आरुढ़॥

सवैया ।

बाल विलोकतहीं झलकी सी गुपाल गरे जलबिन्द की मालै। आपुस मै मुसक्यानी सखी हरिदेव जू बातें बनाइ बिसालै॥ सांप ज्यों पौन गिलै उगिलै बिषयों रवि ऊषम आनि उगालै। जात घुस्यो घरही में घने तपधीनु भयो तनुघाम के घालै॥ ६७॥

दोहा ।

भूत रु भावी अरथ कों बर्तमान सु बखानु ।
भाविक बस्तु गंभीर कों सोई भाविक जानु ॥

सवैया ।

जादिन तें वृजनाथ भटू इह गोकुल ते मथुराहि गए हैं । छाकि रही तब तें छबि सों छिन छूटति ना छतिया में छए हैं ॥ वै-सिय भांति निहारति हौं हरि नाचत कालिन्दी कूल ठये हें । शत्रु सँहारि कें छत्र धऱ्यो सिर देखत द्वारिकानाथ भये हैं ॥

गम्भीरोक्ति सवैया ।

सबही के मनों मृग वागुरजे दृग मीनन कों गुन जाल लियें । बसुधा सुख सिन्धु सुधारसु पूरन जात चले वृज की गलियें ॥ कबि देव कहें इहि भांति उठी कहि काहू की कोई कहूं अलियें । तबलों सबही यह सोरु परो कि चलो चलिये जू चलो चलिये ॥

दोहा ।

अलङ्कार जामें वहुत सो सङ्कीरन होइ ।
चाहचित्त अभिलाष की आसिष वरनै सोइ ॥

अथ संकीरन सवैया ।

डोलति हैं यह कामलतासु लचीं कुच गुच्छ दरूह उधा की । कौल सनाल किवाल के हाथ छिपी कटि कान्ति कि भाति सुधा की ॥ देव यही मन आवति है सविलास वधू विधि हैं वहुधा की । भाल गुही मुक्तालर माल सुधाधर मैं मनौ धार सुधा की ॥ ७२ ॥

आसिष सवैया ।

भाग सुहाग भरीं अनुराग सों राधे जू मोहन कौ मुख जोवै । भूषन भेष बनावें नये नित सौतिन के चित बन्छित खोवै ॥ रोधन गोधन पुञ्ज चरौ पय दास दुहों दधि दासी बिलोवैं । पूरन काम ह्वै आठहू जाम जु स्याम की सेज सदां सुख सोवैं ॥ ७३ ॥

दोहा।

अलङ्कार ये मुख्य हैं इनके भेद अनन्त।
आन ग्रंथ के पन्थ लखि जानिलेहु मति मन्त॥
शुभ सत्रह से छयालिस चढ़त सोरही बर्ष।
कढ़ी देव मुख देवता भावबिलास सहर्ष॥
दिल्लीपति अवरङ्ग के आजमशाह सपूत।
सुन्यो सराह्यो ग्रन्थ यह अष्टजाम संयूत॥

इति श्री भावबिलास देवदत्त कवि बिरचिते अलङ्कार मुख्य निरुपणो नाम पंचमो बिलासः।